पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार
वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

श्रावण-भादो, कलियुगाब्द 5115, अगस्त, 2013

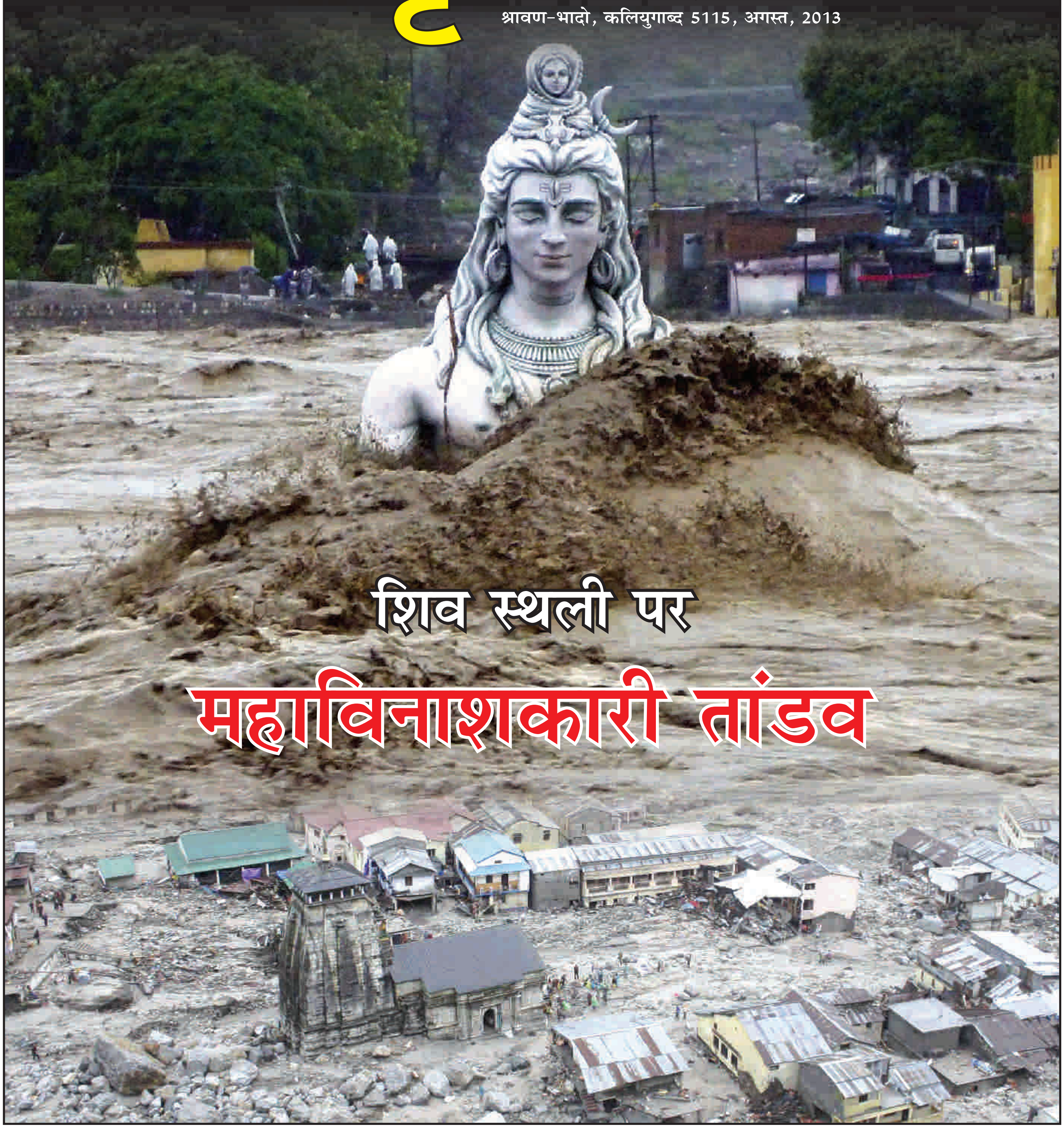

शिव स्थली पर
महाविनाशकारी तांडव

उतराखण्ड : सेवा में जुटा संघ

बचाव कार्य में लगे सेना के जवानों को भोजन कराते स्वयंसेवक

राहत षिविर में ठहराये गये तीर्थयात्री

पीठ पर राहत सामग्री ले जाते संघ के कार्यकर्ता

- १५ अलग -अलग स्थानों पर कार्य कर रहे हैं सहायता शिविर : ऋशिकेश, चम्बा, थन्साली, हरिद्वार, जोशीमठ, कर्णप्रयाग, चमोली, श्रीनगर, नेतवार, देहरादून, पोखरी,धत्युद, उतरकाशी, गुप्तकाशी, मनेरी। इसके अलावा अनेक स्थानों पर छोटे केन्द्र भी बनाये गये हैं।

- इन सहायता केन्द्रों से भोजन वितरण किया गया, स्वास्थ्य शिविर, बचाव कार्यों में सहयोग, यात्रियों को निश्चित स्थानों पर पहुंचाने के लिये वाहनों की व्यवस्था आदि।

- लगभग ५ हजार स्वयंसेवक बिना थके मैदानी व बाढग्रस्त क्षेत्रों में सेवा कार्यों में लगे रहे।

- जहां सडकें टूट गयी थी वहां पीठ पर सहायता सामग्री लादकर कठिन पहाडी रास्तों से यह सामग्री पहुंचाई स्वयंसेवकों ने।

- लगभग ८२०० तीर्थ यात्रियों को उतरकाशी और चिन्याली सौध से ऋशिकेश तक वाहन व्यवस्था उपलब्ध कराई।

- सेना व भारत तिब्बत सीमा बल को बचाव कार्यों में सहयोग किया व उनके लिये भोजन आदि की व्यवस्था की।

- लगभग २०० गांवों में जो पूरी तरह बर्वाद हो गये थे उनके भोजन व रहने की वयवस्था की।

- पहले दिन से अब तक केवल संघ द्वारा इकठ्ठी की गई २० टक से अधिक सामग्री लोगों तक पहुंचाई, जिसमें खाने की सामग्री, दवाईयां, पानी की बोतलें, पहनने के कपडे, कम्बल आादि थे।

- राश्टीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रदेश के स्वयंसेवकों ने डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति, शिमला के माध्यम से लगभग ६ लाख रूपये तथा सेवा भारती ने भी १ लाख रूपये एकत्र करके उतराखण्ड दैवी आपदा पीडित सहायता समिति को भेजे हैं। इसके अतिरिक्त संघ के स्वयंसेवकों ने किन्नौर में आई बाढ पीडितों के लिये भी रामपुर में भोजन व्यवस्था तथा सांगला में भी मदद की।

- संघ के सरकार्यवाह श्री भ याजी जोशी ने देहरादून में बताया कि संघ द्वारा पुनर्वास की व्यापक योजना बनाई गयी है। प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार के साधन उपलब्ध कराने, निराश्रित परिवारों का संरक्षण, अनाथ बच्चों का पालन पोशण, विद्यार्थियों की शिक्षा तथा बालिकाओं के विवाह जैसे महत्वपूर्ण कार्य संघ अपने हाथ में लेगा।

इस अंक में

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुखस्यानन्तरं सुखम्।
पर्यायेणोपसर्पन्ते नरं नेमिमरा इव ॥

भावार्थ : मनुष्य के पास सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख क्रमशः आते रहते हैं। ठीक वैसे ही, जैसे रथचक्र की नेमि के इधर उधर अरे घूमते रहते हैं।

वर्ष : 13 अंक : 08

मातृवन्दना

मासिक

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द
5115, अगस्त, 2013

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
हरीश चन्द्र

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।

वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

आपदा ने खोली प्रबंधन की असलियत................................8

उत्तराखंड में हुआ विनाश वास्तव में अनियोजित विकास और लोगों द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम है। 1975 में प्रस्तुत किये गए उस प्रारूप विधेयक पर भी आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई जिसमें बाढ़ों को रोकने के लिये नदियों के किनारे सीमित निर्माण करने की बात कही गई थी। उत्तराखंड में आपदा प्रबंधन केवल फाइलों तक सीमित है।

सम्पादकीय	प्रकृति का संरक्षण ही वास्तविक पूजा	5
प्रेरक प्रसंग	क्रोध से भजन पूजन निष्फल	6
चिन्तन	ज्ञान की गम्भीरता का प्रतीक मौन	7
आवरण	मानव और प्रकृति की रक्षा के लिये अब जागने का वक्त	10
संगठनम्	उस विपदा में दिखी संगठन की शक्ति	12
देवभूमि	ड्रीम बनकर रह गए ड्रीम प्रोजेक्ट	15
देश-प्रदेश	जाति आधारित रैलियों पर रोक	16
धूमती कलम	महाबोधि मंदिर पर आतंकी कहर	19
युवापथ	आपकी लापरवाही कहीं भटका न दे दिशा	20
दृष्टि	रिक्शा चालक ने लौटाया 1.90 करोड़ का चेक	21
काव्य जगत	राष्ट्र घोष	22
महिला जगत	बेटियों के खिलाफ खड़ी मशीनें	23
स्वास्थ्य	छाती में पानी का जमाव	24
कृषि	जैविक खेती से मुनाफा ही मुनाफा	25
प्रतिक्रिया	सरकारी शरण में मतांतरण	26
सार्द्धशती	शिकागो की धर्म महासभा में आत्मीयता का बोध	27
समसामयिकी	खाद्य सुरक्षा का सपना	28
विविध	17वीं सिंधु दर्शन यात्रा	30
पुण्यस्मरण	वजीर राम सिंह पठानिया	31
विश्व दर्शन	अमेरिकी विश्वविद्यालय में गीता पढ़ना अनिवार्य	32
बाल जगत	कहानी बीजगणित रेखागणित की	34

पाठकों के पत्र

आप द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका मातृवन्दना कभी कभी हमारे अधिकारी पुस्तकालय में भेज देते हैं। मैं पहले उसे पढ़ता हूं। तत्पश्चात् पुस्तकालय के पत्रिका पटल पर पाठकों के पढ़ने हेतु लगाता हूं। हमारे सभी पाठकगण इसे तत्मयता से पढ़ते हैं और इच्छा व्यक्त करते हैं कि अगर ये नियमित मिल जाए तो अच्छा रहेगा। अगर सम्भव हो सके तो इसे आप नियमित नि:शुल्क भेजने का प्रबंध कर सकें तो अति उत्तम रहेगा।

–**श्याम लाल**, पुस्तकालय प्रमुख, केशवकुंज, नई दिल्ली

(अग्रिम मास से मातृवन्दना 'केशव पुस्तकालय' हेतु नियमित रूप से प्रेषित की जाएगी। –सम्पादक)

जुलाई अंक प्राप्त किया, पढ़ा। निस्संदेह मातृवन्दना लोकप्रियता की ओर अग्रसर हो रही है क्योंकि यह सार्थकता अपना रही है अभिव्यक्ति में। जुलाई अंक की दोनों कविताएं प्रशंसनीय है। सामान्यत: आज हम लक्ष्मी के पुजारी बन गए हैं। लोभी और अहंकारी अवसरवादी होते हैं। अत: दोहरी मानसिकता अपनाते हैं।

मनोविज्ञान के अनुसार मानव जाति चार वर्गों में विभक्त होती है। प्रथम वर्ग में अति प्रबुद्ध महापुरुष, द्वितीय बुद्धिजीवी कवि-लेखक, तृतीय श्रेणी के लोग धन सम्पत्ति जोड़ने में माहिर होते हैं। इनका संख्या 80 प्रतिशत तक होती है। समाज सभ्यता, संस्कृति, परम्पराओं, धर्म-कर्म, कर्मकाण्डों तथा शासन-प्रशासन को बदलने वाले इसी श्रेणी के नागरिक होते हैं। यही सरकारें बदल सकते हैं। चौथी श्रेणी के लोग भीड़ तंत्र के अंग हैं। देश व समाज-मानवता का मार्गदर्शन करने वाले प्रकाण्ड प्रतिभाशाली अवतारी पुरुष होते हैं जो कभी कभार अवतरित होते हैं। शांति लाने हेतु इन्हें बहुमत का साथ एवं सहयोग चाहिये। किन्तु विलक्षण होने के कारण बहुमत इन्हें बड़े विलम्ब से समझ पाता है। मातृभूमि पर बलिदान होने वाले यही महापुरुष होते हैं। इन्हें समाज समझ नहीं पाता। अत: ये अपना बलिदान देकर मातृभूमि पर न्यौछावर हो जाते हैं। यदि इन्हें बहुमत का सहयोग मिले तो क्रांति शीघ्र ही आती है और मातृभूमि लाभांवित होती है। किन्तु भारत का दुर्भाग्य रहा है कि 1947 के पश्चात् इन्हें जनता में लक्ष्मी के पुजारियों व अब सरवादियों ने इन्हें राष्ट्र की बागडोर नहीं थमाई।

क्रियाशीलता से शक्ति संपादन

उत्कट और बलवती आकांक्षा मनुष्य में वह तत्परता उत्पन्न करती है जो प्रत्येक क्षेत्र में अवरोधों को चीरती, रुकावटों को हटाती और बाधाओं को मिटाती अभीष्ट दिशा में बढ़ती जाती है। तत्परता के बल पर ही किसी भी क्षेत्र में सफल हुआ जा सकता है, क्योंकि उसके द्वारा प्रेरित क्रियाशीलता अभीष्ट शक्ति संपादित कराती है और यह सुविदित है कि सक्रियता अथवा निरंतर अभ्यास से पूरे शरीर को या उसके किसी भी अंग को अथवा व्यक्तित्व के किसी भी पक्ष को बलवान बनाया जा सकता है। लुहार का दाहिना हाथ अपेक्षाकृत अधिक मजबूत होता है, क्योंकि अधिक काम में आने के कारण उसकी क्षमता बढ़ी हुई रहती है। पैदल चलने के अभ्यासी लोगों की टाँगें मजबूत पाई जाती हैं। नफीरी बजाने वालों के गलफड़े फेफड़े दूसरे लोगों की तुलना में अधिक पुष्ट होते हैं। इसका एक मात्र कारण उन अंगों की क्रियाशीलता ही है। ❑

–पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

स्मरणीय दिवस (अगस्त)

भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस, ईद	9 अगस्त
अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस	12 अगस्त
अखण्ड भारत दिवस	14 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
रक्षा बंधन	20 अगस्त

प्रकृति का संरक्षण ही वास्तविक पूजा

प्राचीन काल से हिन्दू धर्म में चार धाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इनके प्रति हिन्दुओं की आस्था में आज तक कोई कमी नहीं आई। उस काल में जब आवागमन के साधन सीमित थे अपितु न के बराबर थे, तब भी तीर्थयात्री अधिकांश तीर्थ मार्ग पैदल चलकर पार करते थे। उत्तराखंड के बद्रीनाथ-केदार नाथ धाम के लिये तो स्वतंत्रता पूर्व पर्वतीय मार्ग पैदल ही तय करना पड़ता था। जब किसी परिवार से कोई व्यक्ति चार धाम की यात्रा के लिये जाता था तो घर गांव के सभी लोग उसे इस प्रकार विदा करते थे कि मानो उसका वापिस लौटना असम्भव हो किन्तु अत्यधिक कठिनाइयों के बावजूद कुछ अपवादों को छोड़ सभी यात्री सुरक्षित अपने घर वापिस पहुंच जाते थे। किन्तु इस बार शिवस्थली पर ऐसा विनाशकारी ताण्डव हुआ कि अत्यंत सौभाग्यशाली तीर्थयात्री ही बड़ी मुश्किल से सेना व स्वयंसेवकों की सहायता से किसी तरह अपने घर वापिस लौट पाए। वो हजारों तीर्थ यात्री और अन्य स्थानीय लोग निश्चय से अत्यंत दुर्भाग्यशाली थे जो पलक झपकते ही काल के ग्रास बन गए। उत्तरांचल का 34 हजार वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र अनयास पूरे देश से कट कर आपदा की भूमि बन गया।

आज जबकि आवागमन के पर्याप्त साधन हैं इसलिये यात्रा सहज हो गई है। पर्वतों, वनों को काट-काट कर चारों ओर सड़कों का निर्माण हो चुका है। ऐसी अनुकूलता के रहते प्रति वर्ष तीर्थ यात्रियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होती जा रही है। पर्वतीय तीर्थस्थल राज्य सरकारों के लिये आय के साधन बन चुके हैं। इसलिये पर्यटन स्थलों की तरह इनको सजाया संवारा जा रहा है। बड़े-बड़े होटल, पार्किंग स्थल अन्य विश्राम गृह, धर्मशालाएं और बढ़िया बाजार बनते-बढ़ते जा रहे हैं। रही-सही कसर विद्युत निर्माण हेतु बड़े-बड़े डैम, बांधों एवं सुरंगों के बनने से पूरी हो गई है। सम्पूर्ण पर्वतीय भूमि खोखली हो चुकी है। शहरों के समान तीर्थों का विकास पर्यावरण को उष्ण बना रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय के ग्लेशियर बड़ी तेजी से पिघलते जा रहे हैं। ये कुदरती माने जाने वाले ग्लेशियर उत्तर भारत की ज्यादातर नदियों के पानी के मुख्य स्रोत हैं। पर्यावरण में हो रहे बदलावों की वजह से हिमालय के ग्लेशियरों को बहुत खतरा है। इस समय इनके पिघलने से 20 हजार झीलें बन चुकी हैं। तकरीबन 200 झीलें ऐसी हैं जिनकी वजह से कभी भी विनाशकारी बाढ़ आ सकती है। इस बार भी केदारनाथ के ठीक ऊपर चार किलोमीटर की दूरी पर अत्यधिक वर्षा या बादल फटने से दरार पड़ गई थी जिस कारण जल का इतना अधिक प्रवाह हुआ कि भयानक बाढ़ आ गई। मुख्य मंदिर को छोड़ पूरा केदार नाथ, गौरी कुण्ड, रामवाड़ा पूर्णतया मलियामेट हो गए। मंदाकिनी ने न केवल अपना रास्ता बदल दिया था बल्कि अपने रास्ते में आने वाली हर चीज-बसों, ट्रकों, कारों, होटलों और लोगों को निगल लिया था। सकते में पड़ी उत्तरांचल सरकार शीघ्र बचाव कार्य न कर सकी। आखिर सेना के जवानों ने कमर कस कर अपनी जान जोखिम में डाली और जिंदा लोगों को उस आपदा से बाहर निकालने का बीड़ा उठाया। खतरनाक हवाई उड़ानें भर कर हेलीकॉप्टरों से तथा छोटे-छोटे पुल बनाकर लोगों को सुरक्षित स्थानों तक लाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ताओं ने अनयास अपनी जान पर खेलकर लोगों की जानें बचायी। अब भी हजारों लोग लापता हैं आज भी सरकार, सुना एवं स्वयंसेवी संगठन उनके अन्वेषण में संरत हैं साथ ही आपदा ग्रस्त स्थानीय लोगों की भी सहायता की जा रही है। उधर दूसरी ओर हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिला के दुर्गम व ऊंचे क्षेत्रों में भी भीषण वर्षा ने विकराल रूप धारण कर सभी सम्पर्क मार्ग तोड़ दिये, कई किसानों व बागवानों के जमीन और बागीचे बह गए।

इस भयानक आपदा से यह अंदेशा बढ़ चुका है कि आगे भी ऐसी प्राकृतिक आपदाएं आक्रमण कर सकती हैं तदर्थ हमें उनका मुकाबला करने के लिये अत्यावश्यक उपाय ढूंढने होंगे। अत्याधुनिक संचार साधनों, उपग्रहों आदि के माध्यम से पूर्व चेतावनी देना बहुत जरूरी है। केन्द्र-राज्यों के बीच तालमेल अत्यंत आवश्यक है। आपदाग्रस्त क्षेत्र में त्वरित पहुंच हो। आपदा प्रबंधन बोर्ड हर राज्य में हो तथा उसकी स्टेट डिजास्टर रिस्पांस फोर्स हो। आपदा की किस्म के अनुसार उसका बचाव ढांचा पहले से ही बनाया जाए जिसमें संकट के समय सभी संसाधनों, व्यक्तियों, सामग्री और मशीनरी को आपस में जोड़ने के लिये एकीकृत कमांड हो। अंततः हम यदि अपना जीवन सुरक्षित चाहते हैं तो हमें प्रकृति के प्रति वही श्रद्धा एवं आस्था रखनी होगी जो हमारी ईश्वर के प्रति है। प्रकृति व पर्यावरण का संरक्षण ही वास्तविक पूजा है। ❑

प्रेरक प्रसंग

महानता के लक्षण

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था। घर में उसकी माता थी। माँ अपने बेटे पर प्राण न्योछावर किए रहती थी, उसकी हर माँग पूरी करने में आनंद का अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने-लिखने में बड़ा तेज और परिश्रमी था। खेल के समय खेलता, लेकिन पढ़ने के समय का ध्यान रखता।

एक दिन दरवाजे पर किसी ने—'माई! ओ माई!' पुकारते हुए आवाज लगाई तो बालक हाथ में पुस्तक पकड़े हुए द्वार पर गया, देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया काँपते हाथ फैलाए खड़ी थी। उसने कहा, 'बेटा! कुछ भीख दे दे।'

बुढ़िया के मुँह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और माँ से आकर कहने लगा, 'माँ! एक बेचारी गरीब माँ मुझे बेटा कहकर कुछ माँग रही है।'

उस समय घर में कुछ खाने की चीज थी नहीं, इसलिए माँ ने कहा, 'बेटा! रोटी-भात तो कुछ बचा नहीं है, चाहे तो चावल दे दो।' पर बालक ने हठ करते हुए कहा—'माँ! चावल से क्या होगा? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वही दे दो न उस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊँगा तो तुम्हें दो कंगन बनवा दूँगा।'

माँ ने बालक का मन रखने के लिए सच में ही सोने का अपना वह कंगन कलाई से उतारा और कहा, 'लो, दे दो।'

बालक खुशी-खुशी वह कंगन उस भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो एक खजाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था। उधर वह बालक पढ़-लिखकर बड़ा विद्वान हुआ, काफी नाम कमाया।

एक दिन वह माँ से बोला, 'माँ! तुम अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूँ।' उसे बचपन का अपना वचन याद था।

पर माता ने कहा, 'उसकी चिंता छोड़। मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूँ कि अब मुझे कंगन शोभा नहीं देंगे। हाँ, कलकत्ते के तमाम गरीब बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे-मारे फिरते हैं, उनके लिए तू एक विद्यालय और एक चिकित्सालय खुलवा दे जहाँ निशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो।' माँ के उस पुत्र का नाम था ईश्वरचंद्र विद्यासागर। ❑

दूरदृष्टि

बहुत दिनों की बात है हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी गाँव में एक बूढ़ा रहता था, जो अनपढ़-गंवार के नाम से चर्चित था। उसके घर के सामने दो बड़े पहाड़ थे, जिससे आने जाने में असुविधा होती थी। पहाड़ के दूसरी ओर पहुँचने में कई दिन लग जाते। एक दिन उसने अपने दोनो बेटों को बुलाया और उनके हाथों में फावड़ा थमाकर दृढ़ता से दोनों पहाड़ों को काट कर उनके बीच रास्ता बनाना शुरू कर दिया। यह देखकर गांव के लोगों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया- तुम सचमुच महामूर्ख हो। इतने बड़े-बड़े पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना तुम बाप बेटों के बस से बाहर है। बूढ़े ने उत्तर दिया—मेरी मृत्यु के बाद मेरे बेटे यह कार्य जारी रखेंगे। बेटों के बाद पोते और पोतों के बाद परपोते। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी पहाड़ काटने का सिलसिला जारी रहेगा। हालाँकि पहाड़ बड़े हैं लेकिन हमारे हौसलों और मनोबल से अधिक बड़े तो नहीं हो सकते। हम निरन्तर खोदते हुए एक न एक दिन रास्ता बना ही लेंगे। आने वाली पीढ़ियां आराम से उस रास्ते से पहाड़ के उस पार जा सकेंगी।

उस बूढ़े की बात सुनकर लोग दंग रह गए कि जिसे वे महामूर्ख समझते थे उसने सफलता के मूलमंत्र का रहस्य समझा दिया। गाँव वाले भी उत्साहित होकर पहाड़ काट कर रास्ता बनाने के उसके काम में जुट गए। कहना न होगा कि कुछ महीनों के परिश्रम के बाद वहाँ एक सुंदर सड़क बन गई और दूसरे शहर तक जाने का मार्ग सुगम हो गया। इसके लिये बूढ़े को भी दूसरी पीढ़ी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। ❑

क्रोध से भजन पूजन निष्फल

श्रीमद्भागवत के महान आचार्य स्वामी अखंडानंद सरस्वती एक बार वृंदावन से हरिद्वार कार से जा रहे थे। कार की मालकिन सेठानी स्वामी जी की भक्त थीं तथा वह प्रायः साधना-भक्ति में लगी रहती थीं। चलते समय उनकी कार का ड्राइवर ठंडे पानी की बोतल साथ रखना भूल गया। रास्ते में जब सेठानी ने पानी मांगा, तो पता चला कि बोतल वृंदावन आश्रम में रह गई है। सेठानी ड्राइवर पर क्रोध करके उसे अपशब्द कहने लगीं। संयम खोकर वह बोली, तुझे मैं नौकरी से निकलवा दूंगी। स्वामी जी को यह अच्छा नहीं लगा। वह बोले, देवी जी, आज क्रोध ने तुम्हारा तमाम भजन-पूजन व साधना निष्फल कर डाला है।

इस प्रकार की साधारण-सी भूल यदि तुम्हारे पतिदेव या पुत्र से हो जाती, तो क्या उन्हें भी तुम अपने घर से निकाल देतीं? स्वामी जी के शब्द सुनते ही महिला का क्रोध काफूर हो गया। उसने जहां भविष्य में क्रोध न करने का संकल्प लिया, वहीं ड्राइवर से अपने कटु शब्दों के लिये क्षमा मांगी। ❑

ज्ञान की गम्भीरता का प्रतीक मौन

❑ प्रोमिला पटियाल

अपने द्वारा बोले गए प्रत्येक बुरे शब्द के लिये मनुष्य को फैसले के दिन सफाई देनी होगी। बुरे शब्दों से हम मौन के द्वारा ही बच सकते हैं। स्मरण रहे सहज मौन ही हमारे ज्ञान की कसौटी है। 'जानने वाला बोलता नहीं और बोलने वाला जानता नहीं' इस कहावत के अनुसार जब हम सूक्ष्म रहस्यों को जान लेते हैं तो हमारी वाणी बंद हो जाती है। ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका में सहज मौन स्वत: ही पैदा हो जाता है।

मौन शब्द तीन अक्षरों के मेल से बना है– म+उ+न=म–मन, उ–उत्कंठित न–नकार अर्थात् मन को संसार की ओर उत्कंठित न होने देना। परमात्मा के स्वरूप में लीन हो जाना ही वास्तविक अर्थ में मौन कहा जाता है।

मनुष्य को आत्मा की वाणी सुनने के लिये, जीवन और जगत के रहस्यों को जानने के लिये, लड़ाई झगड़े, वाद-विवाद को नष्ट करने के लिये, वाचिक-पाप से बचने के लिये, ज्ञान की साधना के लिये, विपत्ति के दिनों को गुजारने के लिये, वाणी के तप के लिये मौन का अवलम्बन लेना चाहिये।

वाणी के संयम हेतु मौन अनिवार्य साधना है। मनुष्य अन्य इन्द्रियों के उपयोग से जैसे अपनी शक्ति खर्च करता है ऐसे ही वह बोलकर अपनी शक्ति का बहुत व्यय कर लेता है। मनुष्य अपनी वाणी के संयम द्वारा अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर सकता है। शक्तियों को अपने भीतर संचित करने के लिये मौन धारण करने की आवश्यकता होती है। जैसे कहा भी गया है कि न बोलने के नौ गुण। ये गुण इस प्रकार हैं।

1. असत्य बोलने से बचेंगे, 2. किसी से बैर नहीं होगा। 3. किसी की निंदा नहीं होगी, 4. क्षमा नहीं मांगनी पड़ेगी। 5. बाद में पछताना नहीं पड़ेगा, 6. समय का दुरुपयोग नहीं होगा, 7. कोई बंधन नहीं होगा। 8. ज्ञान गुप्त रहेगा, अज्ञान ढका रहेगा। 9. अंत:करण की शांति भंग नहीं होगी।

मनुष्य को आत्मा की वाणी सुनने के लिये जीवन और जगत के रहस्यों को जानने के लिये, लड़ाई झगड़े, वाद-विवाद को नष्ट करने के लिये, वाचिक-पाप से बचने के लिये, ज्ञान की साधना के लिये, विपत्ति के दिनों को गुजारने के लिये, वाणी के तप के लिये मौन का अवलम्बन लेना चाहिये। दैनिक जीवन में मितभाषण और हितभाषण की आदत डालकर ही मनुष्य लौकिक और आध्यात्मिक प्रगति का द्वार प्रशस्त कर सकता है।

मौन के विषय में महागुरु कहते हैं- 'सुषुप्त शक्तियों को विकसित करने का अमोध साधन है मौन। योग्यता विकसित करने के लिये मौन जैसा सुगम साधन मैंने दूसरा कोई नहीं देखा।' बोलना एक सुंदर कला है लेकिन मौन उससे भी ऊंची कला है। कभी-कभी मौन कितने ही अनर्थों को रोकने का अमोध उपाय बन जाता है। क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक है उतना सहायक और कोई नहीं। अत:जब तक हो सके तो मौन रहना चाहिये क्योंकि मौन ही ज्ञान की गम्भीरता एवं शक्ति संचय का महान स्रोत है। ❑

बुरी आदतें

बुरी आदतें अक्सर दूसरों की देखा-देखी या सम्बद्ध वातावरण के कारण क्रियान्वित होती और स्वभाव का अंग बनती चली जाती हैं। मन का स्वभाव पानी की तरह नीचे की ओर लुढ़कने का है। इन दिनों लोक प्रवाह भी अवांछनीयता का ही पक्षधर बन गया है। दोस्ती गांठने वाले चमकदार व्यक्तियों में से अधिकांश की आदतें घटिया स्तर की होती हैं। उनके प्रभाव संपर्क से भी वैसा ही अनुकरण चल पड़ता है। इस प्रकार अनायास ही मनुष्य बुरी आदतों का शिकार बनता जाता है। यही है वह चंगुल जिसमें जकड़े हुए लोग हेय जीवन जीते और दुष्प्रवृत्तियों के दुष्परिणाम सहते हैं।

अभ्यास से ही आदत बनती है

आदतें, आसमान से नहीं उतरतीं। विचारों को कार्यान्वित करते रहने का लम्बा क्रम चलते रहने पर वह अभ्यास आदत बन जाता है और उसे अपनाए रहने में जितना समय बीतता है उतना ही वह ढर्रा सुदृढ़ होता चला जाता है। वह परिपक्वता कालांतर में इतनी गहरी जड़ें जमा लेती है कि उखाड़ने के असामान्य उपाय ही भले सफल हो सामान्यतया तो वह अभ्यस्त ढर्रा ही जीवनक्रम पर सवार रहता है और उसी पटरी पर गाड़ी लुढ़कती रहती है। ❑

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

आपदा ने खोली प्रबंधन की असलियत

❑ लक्ष्मीकांत चावला

बहस और चर्चा का विषय यह नहीं कि उत्तराखंड में जो जल प्रलय के रूप में आपदा आई है उसे राष्ट्रीय आपदा कहा जाए अथवा प्रांतीय। यह सच है कि स्वतंत्र भारत में गुजरात भूकम्प के बाद यह सबसे बड़ी आपदा है, जिसमें असंख्य लोगों का जीवन चला गया, धन सम्पदा की भी अकथनीय हानि हुई। जो लोग इस प्रलय में बच गए, इससे उनके मन-मस्तिष्क पर भी कभी न मिटने वाली भय की छाया पड़ गई। सेना, वायुसेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस और आपदा प्रबंधन में लगीं सुरक्षा एजेंसियों ने जो सराहनीय कार्य किया उसी से लोगों का जीवन बचा है और प्रकृति के इस कोप से जूझने में भारत की सुरक्षा एजेंसियों ने ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया है, जिसे सदा याद रखा जाएगा।

अब प्रश्न यह है कि क्या सरकारें सचेत होतीं तो इस मुसीबत को कम किया जा सकता था अथवा आपदा प्रबंधन का काम अधिक शीघ्रता और कुशलता के साथ हम कर सकते थे?एक सुनिश्चित जानकारी के आधार पर यह बताया गया कि उत्तराखंड में वर्ष 2007 में आपदा प्रबंधन अधिकरण की स्थापना हुई थी। लेकिन अफसोस कि आज तक इस कमेटी की कोई बैठक नहीं हो सकी। इसके लिये जो करोड़ों रुपये राज्य को मिले उसका प्रयोग कहां किया गया अथवा नहीं किया गया, इसका भी कोई विवरण जनता और केन्द्र को नहीं दिया गया। सच तो यह है कि आपदा प्रबंधन के लिये उत्तराखंड में आज तक न तो कोई निश्चित नीति बनी और न ही आवश्यक दिशा-निर्देश तय किये गए।

उत्तराखंड में प्रकृति को चुनौती देते हुए वन काट-काट कर बिजली परियोजनाओं के लिये कार्य शुरू कर दिया गया। उत्तराखंड में हुआ विनाश वास्तव में अनियोजित विकास और लोगों द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम है। 1975 में प्रस्तुत किये गए उस प्रारूप विधेयक पर भी आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई जिसमें बाढ़ों को रोकने के लिये नदियों के किनारे सीमित निर्माण करने की बात कही गई थी।

कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने

चमत्कार से कम नहीं मंदिर का बचना

जलप्रलय के कारण केदारनाथ में सब कुछ खत्म हो गया, बचा तो केवल मंदिर। इस प्राचीन मंदिर का सुरक्षित रहना भी एक चमत्कार से कम नहीं माना जा रहा है। चमत्कार यह हुआ कि जब प्रलय आयी तो उसके साथ एक बड़ी चट्टान भी बहकर आई और मंदिर से कुछ दूरी पर जम गई। इससे जलधारा दो हिस्सों में बंट गई और मंदिर तक तेज बहाव नहीं पहुंच पाया, इस कारण मंदिर पूरी तरह सुरक्षित रहा। वहीं पुरातत्वविदों का मानना है कि यह मंदिर प्राचीन स्थापत्य (आर्कीटेक्चर) के कारण बच पाया है। यह मंदिर एक विशाल चट्टान पर खड़ा है। यदि इस मंदिर के नीचे मिट्टी होती तो यह सदियों से खड़ा नहीं रह पाता। पुरातत्वविद् इस मंदिर के सुरक्षित रहने के पांच कारण बता रहे हैं। पहला, यह मंदिर जमीन तल से जितना ऊपर है उसका एक तिहाई भाग जमीन के अन्दर है। दूसरा, मंदिर में लगे पत्थरों को गारे से नहीं जोड़ा गया है, पत्थरों को काटकर एक-दूसरे से जोड़ा गया है। तीसरा, पूरा मंदिर पत्थर के टुकड़ों से बना है। अनुमान है कि पत्थर के एक टुकड़े का वजन 50 से 80 किलोग्राम तक है। चौथा, मंदिर की दीवारें 4 से 5 फीट तक मोटी हैं और मंदिर का भार उसे जड़ बनाए हुए है। पांचवां, जमीन के ऊपर चबूतरे पर मंदिर की बनावट कंगूरेदार है, जिससे पानी का दबाव दीवारों पर नहीं पड़ा। ❑

सभी प्रदेशों की सरकारों को नदियों के किनारे हो रहे निर्माणों को रोकने के लिये उचित पग उठाने को कहा था, परन्तु राजस्थान के अतिरिक्त और किसी सरकार ने इसका उत्तर देना भी उचित नहीं समझा। पंजाब में तो नदियों के किनारे वैध-अवैध रूप में रेत खनन करके कुछ सत्तापतियों को अमीर बनाने का काम किया जा रहा है, यद्यपि इससे बाढ़ का खतरा बढ़ गया है।

आपदा प्रबंधन के कार्य को सरकारों ने इतना महत्त्वहीन समझा कि अधिकतर प्रांतों, विशेषकर प्राकृतिक चुनौतियों से हमेशा घिरे रहने वाले उत्तराखंड ने भी इस दृष्टि में कोई गम्भीर कदम नहीं उठाया। जानकारी के अनुसार आज भी स्वार्थी राजनीतिक नेता और शक्तिशाली ठेकेदार स्वयं अमीर बनने के लिये वृक्ष काटने का काम कर रहे हैं। साथ ही जो सरकार का काम है कि प्रांत के आपदा प्रबंधन से सम्बद्ध अधिकारियों को तथा जनता को इस सम्बंध में कोई प्रशिक्षण दें, वह प्रयास भी सरकार ने नहीं किया। यह भी बताया गया है कि 2011-12 में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से कोई भी धनराशि उत्तराखंड को नहीं मिली, क्योंकि पहले भेजे पैसे का हिसाब केन्द्र को नहीं भेजा गया। ऐसा लगता है कि पहले प्राप्त धनराशि जिस कार्य के लिये मिली थी, वह कार्य ही नहीं किया गया और अब तो इस संकटकाल ने यह सिद्ध कर दिया है कि उत्तराखंड में आपदा प्रबंधन केवल फाइलों तक सीमित है। जहां-जहां यह काम होना चाहिये था वहां परिणाम शून्य है। दु:खद पक्ष यह भी है कि जो आपदा प्रकोष्ठ यहां स्थापित किया गया, वहां कोई सुनने और उत्तर देने वाला भी नहीं है।

आपदा प्रबंधन के कार्य में देश के दूसरे प्रांतों की स्थिति भी कुछ ज्यादा अच्छी नहीं। पंजाब में तो कुछ कर्मचारी ठेके पर भर्ती करके चंडीगढ़ के सचिवालय में बंद कर दिये गए हैं और उन्हें भी फाइलें लिखने और पढ़ने का काम ही सौंपा गया है। दिल्ली में भी राज्य सरकार द्वारा स्थापित आपदा प्रबंधन प्राधिकरण लगभग दो दर्जन कर्मचारियों को ठेके पर रखकर कभी कभी मॉक ड्रिल करके अपने अस्तित्व का परिचय जनता को दे देता है।

कुछ वर्ष पहले जापान और अमरीका ने अपने देश में आई आपदाओं को जिस तरह से सम्भाला, वह अनुकरणीय है। देश भर के मंत्री बिना काम भी विदेश यात्राओं पर करोड़ों रुपये और समय खर्च करते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा पुलिस के अधिकारी भी यदा कदा प्रशिक्षण लेने विदेश जाते हैं तो फिर आपदा प्रबंधन के लिए जापान और अमरीका जैसे देशों में अपने अधिकारियों को भेजकर उन्हें कार्यकुशल बनाने एवं आपदा से सक्षम होकर निपटने की योग्यता देने में क्या हर्ज है। ❑

उत्तराखंड में प्रकृति को चुनौती देते हुए वन काट-काट कर बिजली परियोजनाओं के लिये कार्य शुरू कर दिया गया। उत्तराखंड में हुआ विनाश वास्तव में अनियोजित विकास और लोगों द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम है। 1975 में प्रस्तुत किये गए उस प्रारूप विधेयक पर भी आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई जिसमें बाढ़ों को रोकने के लिये नदियों के किनारे सीमित निर्माण करने की बात कही गई थी। उत्तराखंड में आपदा प्रबंधन केवल फाइलों तक सीमित है। जहां-जहां यह काम होना चाहिये था वहां परिणाम शून्य है। दु:खद पक्ष यह भी है कि जो आपदा प्रकोष्ठ यहां स्थापित किया गया, वहां कोई सुनने और उत्तर देने वाला भी नहीं है।

क्यों नाराज हुए केदारनाथ?

हिमालयी क्षेत्र में बाबा केदारनाथ का कहर क्यों बरपा, इसके कई कारण हैं। इनमें प्रमुख हैं–

- हिमालय के ऊंचे इलाकों में केदारनाथ-हेमकुण्ड साहिब-बद्रीनाथ में शुरू की गई हेलीकॉप्टर सेवा की दिनभर में सैकड़ों उड़ानों से वहां का वातावरण गर्म हुआ।
- हजारों की संख्या में पहुंच रहे वाहनों के धुएं ने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया।
- गंगा किनारे, मंदिरों के आसपास बड़ी-बड़ी इमारतों का अंधाधुंध निर्माण कार्य, आबादी का बढ़ता बोझ।
- तीर्थाटन का पर्यटन के रूप में होता बदलाव।
- हिमालयी क्षेत्र में सड़क और बांध परियोजनाओं में विस्फोटक पदार्थों का इस्तेमाल।
- बांध-सड़क परियोजनाओं में हरे पेड़ों की कटाई।
- पहले वाहनों को पहाड़ी मार्गों पर 55 क्विंटल भार ले जाने की अनुमति थी जो अब दो सौ क्विंटल से भी ज्यादा ले जा रहे हैं।
- पहाड़ी इलाकों का बिना योजना के विकास, राजनीतिक दखलंदाजी, प्रशासनिक अस्थिरता।
- बिल्डर-माफियाओं का दबदबा।
- बांधों की गाद से बढ़ता नदियों का जलस्तर।

आवरण

मानव और प्रकृति की रक्षा के लिये अब जागने का वक्त

उत्तराखंड में जिस विनाशलीला को देश देख रहा है, उसके मूल में हमारा वहां पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना है। बांध बनाने के लिये पहाड़ों में सुरंग खोदकर नदियों को एक से दूसरी जगह पहुंचाने का काम जारी है। अगर सभी योजनाओं पर काम पूरा हो गया तो एक दिन जल स्रोतों के लिये मशहूर उत्तराखंड में नदियों के दर्शन दुर्लभ हो जाएंगे। इससे जो पारिस्थितिकीय संकट पैदा होगा उससे इन्सान तो इन्सान, पशु-पक्षियों के लिये भी अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जाएगा। सरकार गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित करती है, पर भागीरथी नदी अब पहाड़ी घाटियों में ही खत्म होती जा रही है। गंगोत्री के कुछ करीब से एक सौ तीस किलोमीटर दूर धरासू तक नदी को सुरंग में डालने से धरती की सतह पर उसका अस्तित्व खत्म सा हो गया है।

उस इलाके में बन रही सोलह जल विद्युत परियोजनाओं की वजह से भागीरथी को धरती के अन्दर सुरंगों में डाला जा रहा है। यही हालत अलकनंदा की भी है। एक अनुमान के मुताबिक राज्य में सुरंगों में डाली जाने वाली नदियों की कुल लम्बाई करीब पन्द्रह सौ किलोमीटर होगी। इतने बड़े पैमाने पर अगर नदियों को सुरंगों में डाला गया तो जहां कभी नदियां बहती थीं वहां सिर्फ नदी के निशान ही बचे रहेंगे।

उस इलाके में बन रही सोलह जल विद्युत परियोजनाओं की वजह से भागीरथी को धरती के अन्दर सुरंगों में डाला जा रहा है। यही हालत अलकनंदा की भी है। एक अनुमान के मुताबिक राज्य में सुरंगों में डाली जाने वाली नदियों की कुल लम्बाई करीब पन्द्रह सौ किलोमीटर होगी। इतने बड़े पैमाने पर अगर नदियों को सुरंगों में डाला गया तो जहां कभी नदियां बहती थीं वहां सिर्फ नदी के निशान ही बचे रहेंगे।

जोशीमठ जैसा पौराणिक महत्व का नगर पर्यावरण से हो रहे इस मनमाने खिलवाड़ की वजह से खतरे में है। उसके ठीक नीचे पांच सौ बीस मेगावॉट की विष्णुगढ़-धौली परियोजना की सुरंग बन रही है। कुमाऊं के बागेश्वर जिले में भी सरयू नदी को सुरंग में डालने की योजना पर अमल शुरू हो चुका है। हैरत की बात है कि उत्तराखंड जैसे छोटे भूगोल में पांच सौ अठावन छोटी-बड़ी जल विद्युत परियोजनाएं प्रस्तावित हैं। इन सभी पर काम शुरू होने पर वहां के लोग कहां जाएंगे, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। राज्य और केन्द्र सरकारें इस हिमालयी राज्य की पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता को नहीं समझ रही हैं। दुनियाभर के भूगर्भ वैज्ञानिक कई बार कह चुके हैं कि हिमालयी पर्यावरण ज्यादा दबाव नहीं झेल सकता इसलिये उसके साथ ज्यादा छेड़छाड़ ठीक नहीं। लेकिन इस बात को समझने के लिये हमारी सरकारें बिल्कुल तैयार नहीं हैं।

जब तक सरकारों पर चौतरफा दबाव नहीं पड़ेगा तब

बद्रीनाथ मंदिर समिति की अभिनंदनीय पहल

उत्तराखंड सरकार की प्रशासनिक अव्यवस्थाओं के रहते सिर्फ एक उदाहरण अनुकरणीय कहा जा सकता है। जैसे ही सड़क टूटने और बादल फटने के समाचार मिले, बद्री केदार मंदिर समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी बी.डी. सिंह ने घटना की गम्भीरता को इसलिये समझ लिया क्योंकि वे खुद भारत-चीन सीमा के अंतिम गांव 'माणा' के रहने वाले हैं और वन विभाग के अधिकारी हैं। उन्होंने 16 तारीख को ही एक आदेश, निर्देश अनुरोध सभी लॉज वालों और होटल मालिकों के लिये भेज दिया कि वे तीर्थयात्रियों से अब किराया न वसूलें। बद्रीनाथ मंदिर परिसर सहित टैक्सी स्टैंड व अन्य दो स्थानों पर लंगर का प्रबंध कर दिया। बद्रीनाथ की व्यापार सभा को भी लिखित निर्देश भेज दिया कि वे केवल मुद्रित मूल्य पर ही सामान बेचें। ये सब हो रहा है या नहीं इसके लिये उन्होंने रात को कुछ लॉज में जाकर पूछताछ भी की।

मंदिर समिति के जितने भी कर्मचारी थे, उनके अलग-अलग दल बनाकर सारी व्यवस्थाओं का संचालन करना शुरू कर दिया। चूंकि तीर्थयात्रियों का मुख्य केन्द्र बद्रीनाथ मंदिर दर्शन ही रहता है, इसलिए वहां से सूचनाओं का आदान-प्रदान एवं व्यवस्थाओं का संचालन भी सुचारू रूप से हो रहा था। उन्होंने कुछ पत्रक भी बांटे ताकि प्रत्येक धर्मशाला, लॉज या होटल में जितने लोग रह रहे हैं, उनके नाम क्या हैं, इसकी जानकारी जुटाई जा सके और उसी अनुरूप उनको भेजने की व्यवस्था भी की जा सके। ❑

तक वे विकास के नाम पर अपनी मनमानी करती रहेंगी और तात्कालिक स्वार्थों के लिये कुछ स्थानीय लोगों को भी अपने पक्ष में खड़ा कर विकास का भ्रम पैदा करती रहेंगी।

आज उत्तराखंड में कई जगहों पर अवैज्ञानिक तरीके से खड़िया और मैग्नेसाइट का खनन भी चल रहा है। इसका सबसे बुरा असर अल्मोड़ा और पिथौरगढ़ जिलों में पड़ा है। इस वजह से वहां भूस्खलन लगातार बढ़ रहे हैं। पर्यावरण से हो रही इस छेड़छाड़ की वजह से 'ग्लोबल वार्मिंग' का असर उत्तराखंड में लगातार बढ़ रहा है। वहां का तापमान आश्चर्यजनक तरीके से घट-बढ़ रहा है। सुरक्षा के उपाय नहीं किये गए तो भविष्य में ग्लेशियर लापता हो जाएंगे। तब उत्तर भारत की खेती के लिये वरदान मानी जाने वाली नदियों का नामो निशान भी गायब हो सकता है। अब नेपाल सीमा से लगे पंचेश्वर में सरकार एक और विशालकाय बांध बनाने जा रही है। यह बांध दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा बांध होगा। यह योजना नेपाल सरकार और भारत सरकार मिलकर चलाने वाली है। इससे छह हजार चौर सौ मैगावॉट बिजली पैदा करने की बात की जा रही है। इसमें भी बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होना है और उनकी खेती योग्य उपजाऊ जमीन बांध में समा जानी है।

लग रहा है कि एक दिन उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में सिर्फ बांध ही बांध नजर आएंगे। लेकिन इस विकास को देखने के लिये लोग नहीं बचेंगे। तब पहाड़ों में होने वाले इस विनाश के असर से मैदानों के लोग भी नहीं बच पाएंगे। कम से कम हमें अब तो जाग जाना चाहिये। ❑

सेना और स्वयंसेवकों का सहारा

कल्पना कीजिये कि अगर सेना न होती तो इस भीषण दैवी आपदा में कौन किसकी सहायता कर पाता?टेलीविजन पर आकर मुंह चमकाते चंद चेहरे सिर्फ और सिर्फ आंकड़ों की बाजीगरी करते रहे और हतप्रभ, हताश और नाकारा प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा था। ऐसे में भारतीय सेना और वायुसेना के हेलीकॉप्टरों ने जो किया और जैसे किया उससे उनके बारे में एक ही छवि बनी देवदूत। गंगोत्री के पास हर्षिल में फंसे लोगों से लेकर बद्रीनाथ, केदारनाथ, गौरीकुंड, रामबाड़ा, गुप्तकाशी, अगस्तमुनि, तिलबाड़ा, जंगल चट्टी हेमकुंड साहब, गोविंदधाम, गोविंदघाट और हनुमान चट्टी के तंग गलियारों से बहुत नीची उड़ान भरते हुए जिस जांबाजी और सेवाभाव से सैनिकों ने उन्हें निकाला, उसकी सब तरफ प्रशंसा हो रही है। बद्रीनाथ में लोगों को हेलीकॉप्टर से भेजने का कार्य संचालन कर रहे ले. कर्नल कर्मवीर को चिंता थी कि मौसम ज्यादा खराब हो उससे पहले सब लोग यहां से निकल जाएं। सिर्फ सेना के जवान ही थे जो वहां न केवल हेलीकॉप्टर की उड़ान संचालित कर रहे थे बल्कि लोगों को लाइन में लगाना, उनको नियंत्रित रखना, उनके बीच टोकन तक बांटना, ताकि लोग रात-रात भर खुले में हेलीकॉप्टर के इंतजार में भीगते न रहें, यह सब भी वही कर रहे थे। कुछ लोग सेना के जवानों से भी उलझ पड़ते कि पहले हमें भेजो, हमारी उम्र ज्यादा है या हम बीमार हैं, पर ले. कर्नल कर्मवीर के चेहरे पर शिकन तक नहीं देखी। वे बड़े सरल और नम्र शब्दों में कहते, 'अम्मा-बाबा सब जाएंगे, भरोसा रखो।' न किसी को डांटना, न किसी को फटकारना और यह शिकायत भी नहीं कि लाइन लगाने या टोकन बांटने का जो सामान्य सा काम, यहां का सामान्य प्रशासन कर सकता था, वह भी वो क्यों नहीं करता। बुजुर्ग, असहाय, थके-मांदे लोगों को सेना के जवानों ने न केवल हेलीकॉप्टर से एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाया बल्कि इन सबका सामान भी कंधों पर ढोया। और तो और जो बेहद लाचार थे, चलने में सक्षम नहीं थे, उन्हें भी कई-कई किलोमीटर तक कंधों पर ढोकर सुरक्षित नीचे तक पहुंचाया। इसलिये सबकी जुबान पर एक ही बात थी– यह सरकार नाकारा है, हमें तो सिफ सैनिकों का सहारा है। ❑

सबने माना देवदूत

बुजुर्ग, असहाय, थके-मांदे लोगों को सेना के जवानों ने न केवल हेलीकॉप्टर से एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाया बल्कि इन सबका सामान भी कंधों पर ढोया। और तो और जो बेहद लाचार थे, चलने में सक्षम नहीं थे, उन्हें भी कई-कई किलोमीटर तक कंधों पर ढोकर सुरक्षित नीचे तक पहुंचाया। इसलिये सबकी जुबान पर एक ही बात थी– यह सरकार नाकारा है, हमें तो सिर्फ सैनिकों का सहारा है।

संगठनम्

उस विपदा में दिखी संगठन की शक्ति

उत्तराखण्ड में लम्बे प्रवास से लौटे संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी से बातचीत के मुख्य अंश :

उत्तराखण्ड में जो त्रासदी हुई है, वह इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है। सेना और आईटीबीपी के जवानों ने अपनी जान पर खेलकर सराहनीय काम किया। इसके साथ-साथ हमारे स्वयंसेवकों ने भी अपनी जान जोखिम में डालकर प्रशंसनीय काम किया है।

प्रारम्भ में तीन-चार प्रकार के कार्य करने की आवश्यकता था। लेकिन सबसे आवश्यक और बड़ा काम था, जो तीर्थ यात्री फंसे थे, उनको किसी प्रकार निकालना। क्योंकि न उनको आगे बढ़ने के लिये कोई रास्ता था और न सुरक्षा की स्थिति। जंगल में भगवान भरोसे वे लोग जहां-तहां पड़े थे। उनको खोजना और सुरक्षित निकालना आवश्यक था लेकिन आसान नहीं। हेलीकॉप्टर से तो कई दिनों बाद तीर्थयात्रियों ने जाना शुरू किया। हेलीकॉप्टर जब जाने भी लगा तो वह फंसे तीर्थयात्रियों तक पहुंच नहीं पाता था। जंगल और पहाड़ों पर किसी जगह हेलीकॉप्टर को उतारा भी जाता था तो फंसे हुए लोग हेलीकॉप्टर से बहुत दूर होते थे। थके-हारे, भूखे-प्यासे, बूढ़े-बच्चे तीर्थयात्रियों को मीलों चल कर हेलीकॉप्टर या हैलीपैड तक पहुंचना पड़ता था। स्वयंसेवकों ने अनेक तीर्थयात्रियों को अपने कंधो और पीठ पर लाद कर कई मीलों चल उन्हें हैलीपैड और हेलीकॉप्टर तक पहुंचाने का काम किया। सेना के जवान और आईटीबीजी के जवानों के साथ मिलकर हमारे स्वयंसेवकों ने ऐसे कठिन कार्यों को अंजाम दिया, नहीं तो उन लोगों को बच पाना सम्भव नहीं था। इसके बाद दूसरा आवश्यक काम किया गया फंसे तीर्थयात्रियों तक राहत सामग्री पहुंचाने का। बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी फंसे हुए थे। स्वयंसेवक राहत सामग्री लेकर उन तक पहुंचे।

स्वयंसेवकों ने अनेक तीर्थयात्रियों को अपने कंधो और पीठ पर लाद कर कई मीलों चल उन्हें हैलीपैड और हेलीकॉप्टर तक पहुंचाने का काम किया। सेना के जवान और आईटीबीजी के जवानों के साथ मिलकर हमारे स्वयंसेवकों ने ऐसे कठिन कार्यों को अंजाम दिया, नहीं तो उन लोगों को बच पाना सम्भव नहीं था। इसके बाद दूसरा आवश्यक काम किया गया फंसे तीर्थयात्रियों तक राहत सामग्री पहुंचाने का।

तीसरा, जहां-जहां हमारे विद्यालय एवं केन्द्र थे, वहां-वहां हमारे स्वयंसेवकों ने सहायता शिविरों का संचालन कर रखा था। साथ ही, एक हेल्प लाईन भी खोलकर देश भर में सूचना प्रेषित की जा रही थी, फंसे हुए तीर्थयात्रियों से उनके सम्बंधियों व घरों का नम्बर लेकर यात्रियों की अवस्था से उनको सूचित कराया जा रहा था।

सेवा कार्य में सक्रिय रूप से जुटे स्वयंसेवकों की निश्चित संख्या अभी बताना मुश्किल है, क्योंकि कई स्थानों पर सेवा का कार्य चल रहा है। सेवा कार्य होने वाली जगहों पर ठीक से टेलीफोन सम्पर्क भी नहीं हो पा रहा है। फिर भी मेरा अनुमान है कि कम से कम पांच हजार स्वयंसेवक और विश्व हिन्दू परिषद, विद्याभारती जैसे हमारे भिन्न-भिन्न संगठनों के कार्यकर्ता सेवा कार्य में सक्रिय रहे।

स्थानीय लोगों को तो अच्छी तरह मालूम हो गया है कि सेना, आईटीबीपी और स्वयंसेवकों के अलावा वहां सेवा करने के लिये और कोई भी नहीं था। प्रशासन नाम की कोई चीज थी ही नहीं। प्रशासन का कोई तारतम्य भी नहीं था। प्रशासन ने फंसे हुए तीर्थयात्रियों को निकालने और उन तक राहत सामग्री पहुंचाने के लिये कोई पूर्वाधाार भी नहीं खड़ा कर सका था। इसलिए, चूंकि विद्यालय हमारे स्वयंसेवक चलाते हैं, गांव-गांव में संघ की शाखाएं हैं, तो वहां काम करने वाले स्वयंसेवकों ने आपस में तारतम्य मिलाकर बखूबी सेवा कार्य किया। हमारे सेवा कार्य से प्रभावित होकर दूर-दूर से लोग टेलीफोन कर हमारे स्वयंसेवकों को बधााई दे रहे हैं। इसी तरह जो हजारों तीर्थयात्री सकुशल अपने घरों को पहुंच गए हैं, उन्होंने भी बधााई दी है और स्वयंसेवकों के सेवा कार्य की सराहना की है। ❑

उत्तराखण्ड का दर्दनाक सच

❑ सुभाष चंद्र सूद

आदि शंकराचार्य द्वारा 1300 वर्ष पूर्व स्थापित चार धामों की यात्रा में से उत्तराखण्ड स्थित श्री बद्रीनाथ-केदारनाथ धामों की यात्रा प्रतिवर्ष समस्त देशवासी बड़ी श्रद्धा एवं आस्था के साथ सम्पन्न करते हैं। सामाजिक जीवन की सक्रियता एवं पर्यटन-तीर्थाटन की सुविधाएं बढ़ने से भी चार धामों का तीर्थाटन एक व्यापक सांस्कृतिक सामाजिक उत्सव जैसा हो गया है। यद्यपि इसमें अधिक सहभागिता प्रौढ़ एवं वरिष्ठ नागरिकों की ही होती है। अपनी प्रोढ़ावस्था में सांसारिक कर्त्तव्यों की यथापूर्ति के पश्चात् आध्यात्मिक एवं ईश भक्ति से प्रेरित होकर वे इन धामों की यात्रा पूरी करते हैं।

सरकार को इस तीर्थाटन से प्रति वर्ष करोड़ों रुपयों का राजस्व मिलता है। वहां स्थानीय नागरिकों को पर्यटकों से करोड़ों का व्यापार एवं रोजगार के अवसर मिलते हैं। एक कल्याणकारी एवं संवेदनशील सरकार से यह एक न्यूनतम अपेक्षा रहती है कि इस श्रद्धा एवं आस्था से भरपूर तीर्थ यात्रा हेतु आवश्यक न्यूनतम प्रशासनिक व्यवस्थाएं उपलब्ध कराए। इस बार अपनी चार धाम की तीर्थयात्रा में सरकारी प्रशासनिक व्यवस्थाओं, आपदा प्रबंधन की घोर उपेक्षा एवं लापरवाही के अनेकों कटु अनुभव सामने आए।

साधारणतया यह यात्रा वर्षाकालीन समय में ही चलती है जब काफी भूस्खलन एवं भारी वर्षा की सम्भावना रहती है। स्थानीय सरकार ने मौसम विभाग की ओर से भारी वर्षा की चेतावनी, भू-उपग्रहों द्वारा ग्लेशियरों के भारी पिघलाव के कारण नदियों में अधिक पानी आने की सम्भावना की चेतावनियों की व्यापक अनदेखी की जिसका परिणाम निर्दोष तीर्थ यात्रियों की असामयिक मृत्यु से हुआ। प्रतिवर्ष तीर्थ यात्रियों की संख्या बढ़ रही है। इस कारण गाड़ियों की संख्या में भी काफी बढ़ोतरी हुई है। यात्रियों एवं गाड़ियों के उचित आवागमन हेतु सरकार के प्रबंध शून्य थे। इस कारण चार-चार घंटे ट्रैफिक को निकालने में लगते थे। बढ़ते यात्री प्रवाह को सुनियोजित कर वैष्णो देवी, अमरनाथ यात्रा की तरह यात्री प्रवाह को चैक करने की कोई सरकारी व्यवस्था न थी आकस्मिक आपदा के समय आपदा चिकित्सा व्यवस्था, ध्वनि चेतावनी, सूचना पत्र-व्यवस्था, पुलिस निगरानी कही देखने को न मिली, सब भगवान भरोसे था। परिणाम आकस्मिक आपदा ने हजारों निर्दोष तीर्थ यात्रियों की जीवनलीला समाप्त कर दी। यात्रा के समय स्थानीय व्यापारी, होटल मालिक यात्रियों से मनमाने दाम वसूल कर रहे थे। दैनिक प्रयोग की चीजों की कीमतों में भी दुगनी, चौगुनी वृद्धि थी। सरकारी प्रशासनिक उपेक्षा एवं स्थानीय नागरिकों के घोर लालची एवं व्यापारिक व्यवहार वृत्ति से तीर्थ यात्रियों में तीर्थाटन के प्रति घोर आनस्था एवं वितृष्णा उत्पन्न होनी शुरू हो गई है। शेष रही सही कसर प्राकृतिक तांडव ने पूरी कर दी है।

उत्तराखण्ड के चारों धामों का वर्तमान संकट कुछ तो प्रकृति प्रेरित परन्तु अधिकांश मानव प्रेरित एवं सरकारी नीतियों के कुप्रबंधन एवं प्राकृतिक चेतावनियों की उपेक्षा का परिणाम है। सरकारी नीतियों के कारण सड़कों के जाल का विस्तार नदियों पर जगह-जगह बिजली हेतु डैम बनाने के लिये पहाड़ों की गहरी खुदाई इस कारण जंगलों का भयानक विनाश हुआ है। उत्तराखण्ड के पहाड़ चट्टानी न होकर हल्की मिट्टी के पहाड़ हैं इसलिये भयानक भूस्खलन उपरोक्त कार्यों से हुआ है। प्रत्युत्तर में प्रकृति ने भी भयानक भारी वर्षा ग्लेशियरों का अधिक पिघलकर झीलों का रूप ले लेना, बादल फटकर भयंकर भूस्खलन करते हुए, नदियों में पानी की मात्रा, तीव्र गति से बढ़ाकर व्यापक तांडव नृत्य करते हुए, जन, धन, माल-मकानों की भयानक तबाही की है।

उत्तराखण्ड की भयानक त्रासदी का यह संदेश है कि हम समय रहते पहाड़-मानव एवं प्राकृतिक साधनों के दोहन में उचित सामंजस्य बिठाए, प्राकृतिक चेतावनियों को सुनें, उचित आपदा प्रबंधनों की व्यवस्था पर ध्यान दें अन्यथा इससे भी भयंकर आपदाएं हमें भविष्य में मिल सकती हैं। जैसा दर्दनाक त्रासदीपूर्ण मंजर इस बार तीर्थ यात्रियों ने स्वयं भुगता है, हजारों परिवारों के अनेकों निर्दोष सदस्य इस आकस्मिक आपदा के शिकार हुए हैं, परिवार के परिवार अनाथ हो गए हैं, कम से कम 2-3 वर्ष तो उत्तराखण्ड की तीर्थयात्रा पर बिरला व्यक्ति ही भविष्य में प्रस्थान करेगा। ❑

दुर्गावाहिनी प्रांत शौर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

विश्व हिन्दू परिषद के आयाम दुर्गावाहिनी के प्रांत स्तर के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 5 से 11 जुलाई तक धुंदन (अर्की) में किया गया। इस बात की जानकारी रजनी ठुकराल ने शिमला से जारी एक प्रेस वक्तव्य में दी। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में प्रदेश के 10 जिलों से 156 बहनों ने भाग लिया जिसमें सात शिक्षिकाएं रहीं। रजनी ठुकराल ने बताया कि इस शिविर का उद्घाटन विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के प्रांत संगठन मंत्री श्री करूणा प्रकाश द्वारा किया गया। सात दिवसीय इस शिविर में प्रांत संगठन मंत्री मनोज कुमार, डॉ. नागेश ठाकुर, रजनी ठुकराल, कैलाश सिंघल, माला रावल का मार्गदर्शन युवतियों को प्राप्त हुआ। विवेकानन्द के स्त्रीपरक विचार, दुर्गावाहिनी, विहिप की स्थापना व उपलब्धि, श्रीराम जन्म भूमि, राष्ट्र के समक्ष वर्तमान समस्याएं, किशोरावस्था, आदर्श हिन्दू घर, लव जेहाद, आतंकवाद आदि विषयों के बारे में युवतियों का वैचारिक प्रबोधान किया गया। कई चर्चा व जानकारी सत्र भी इस शिविर में रहे। युवतियों को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने हेतु नियुद्ध, दंड, योगासन, व योग आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर का समापन 10 जुलाई को हुआ जिसमें मुख्य वक्ता अखिल भारतीय संयोजिका दुर्गावाहिनी माला रावल रही। ❑

बाहरी राज्यों के चुने अस्पताल

राज्य सरकार के सरकारी कर्मचारियों एवं पेंशनरों की स्वास्थ्य सुविधा हेतु हिमाचल से बाहर के तीन अस्पतालों बीबीसी हार्ट केयर पूर्ति अस्पताल जालंधर, फोर्टिस अस्पताल सेक्टर 62 फेज आठ मोहाली, मेट्रो हार्ट इंस्टीट्यूट विद मल्टी स्पेशिलिटी सेक्टर 16-ए फरीदाबाद, पार्क अस्पताल मीरा एनक्लेव चौखंडी नई दिल्ली, टैगोर अस्पताल जालंधर, कालरा अस्पताल नई दिल्ली, प्राइम डायग्नोस्टिक सेंटर चंडीगढ़, सिल्वर ओक अस्पताल मोहाली, ग्रोवर आई लेजर चंडीगढ़ और जेपी आई अस्पताल मोहाली को भी 16 जून 2015 तक एंपैनल कर दिया गया है। ❑

आपदा में मारे गए लोगों के लिये किया गायत्री पाठ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चम्बा व सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने प्राकृतिक आपदा से उत्तराखंड और किन्नौर में मारे गए लोगों की आत्मिक शांति के लिये गायत्री पाठ का आयोजन किया और श्रद्धासुमन अर्पित कर परमात्मा से आपदा से प्रभावित परिवारों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करने की कामना की। स्वयंसेवक संघ और सेवा भारती ने चम्बा शहर, सुल्तानपुर, ओबड़ी, मैहला, तीसा से आपदा प्रभावितों के लिये 1,12,678 रुपये की धनराशि एकत्रित की है। एकत्रित की गई धनराशि आपदा प्रभावितों को भेज दी है।

सेवा भारती के अध्यक्ष संदीप कुमार ने बताया कि आपदा प्रभावितों के लिये जिलावासियों ने जमकर दान दिया है। आपदा प्रभावितों की मदद के लिये चम्बा शहर से 69,528 सुल्तानपुर, ओबड़ी से 19,889 मैहला क्षेत्र से 4,261 रुपये की धनराशि इकट्ठी की गई। ❑

संस्कृत सप्ताह से पत्राचार द्वारा संस्कृत शिक्षण का शुभारम्भ

अब आप घर बैठे संस्कृत सीख सकते हैं। जी हां। हिमाचल प्रदेश में संस्कृत भारती की 'पत्राचार द्वारा संस्कृतम्' योजना का शुभारम्भ संस्कृत सप्ताह से हो रहा है। प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर देशभर में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया जाता है। दूरस्थ शिक्षण की इस योजना का पाठ्यक्रम चार सत्रों में पूरा होगा। छह मास के प्रत्येक सत्र का शुल्क 300 रुपये है। सत्र के अन्त में परीक्षा आपके समीपवर्ती केन्द्र में होगी। उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

प्रत्येक सत्र में बारह पाठों का यह पाठ्यक्रम संस्कृत स्वाध्याय के लिये तैयार किया गया है तथापि प्रत्येक शिक्षार्थी का सम्पर्क निकटवर्ती किसी संस्कृतज्ञ अथवा संस्कृतभारती कार्यकर्ता से कराने का प्रयत्न रहेगा जिससे स्वाधयाय के समय आने वाली कठिनाई को दूर किया जा सके। किसी भी आयु के व्यस्क व्यक्ति इस योजना के अंतर्गत संस्कृत सीखने के लिये स्थानीय संस्कृतभारती कार्यकर्ता से सम्पर्क कर अथवा सीधे संस्कृत भारती कार्यालय शारदाभवन निकट रेलवे स्टेशन पपरोला में शुल्क सहित आवेदन पत्र भर कर पंजीकरण कर सकते हैं। पंजीकरण के पश्चात् पाठ्यसामग्री आपके दिये हुए पते पर भिजवा दी जाएगी। शुभस्य शीघ्रम्। संस्कृत पढ़ें-भारत को जानें। ❑

ड्रीम बनकर रह गए ड्रीम प्रोजेक्ट

पिछले एक साल के दौरान राजधानी की सूरत बदलने के लिये कई ड्रीम प्रोजेक्ट बनाए गए लेकिन आगामी सम्भावनाओं को ध्यान में नहीं रखा गया। इसके चलते अधिकांश ड्रीम प्रोजेक्ट शहरवासियों के लिये सपना ही बनकर रह गए हैं। शहर में मोनो रेल चलाने की बात हो, स्वचलित सीढ़ियां लगाना, पब्लिक रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम, रोप वे, माल रोड और रिज मैदान को यूरोप की तर्ज पर संवारना, पारदर्शी बसें चलाना, लिफ्ट लगाना तथा पार्किंग बनाना सहित कई अन्य योजनाएं जिनको लेकर पिछले एक साल में खूब हल्ला तो मचा लेकिन सभी योजनाएं अभी तक कहीं न कहीं फंसी हुई हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि शहरवासियों को इतने सब्जबाग दिखाए ही क्यों जब करना कुछ था ही नहीं।

प्रदेश में मोनो रेल चलाने की घोषणा करने के करीब दो माह बाद सरकार ने इस प्रस्ताव को नकार दिया है। तर्क दिया गया है कि प्रदेश की कठिन भौगोलिक परिस्थिति को देखते हुए शिमला में मोनो रेल चल पाना सम्भव नहीं है।

शिमला में मैट्रो सिटी की तर्ज पर स्वचलित सीढ़ियां (एस्केलेटर) लगाने की नगर निगम ने घोषणा की थी। केन्द सरकार को इस योजना को बनाकर मंजूरी के लिये भेजा गया है लेकिन अभी तक यह फाइलों में ही कैद हो कर रह गई है।

वर्ष 2003 में जाखू रोपवे को बनाने के लिये जैक्सन कम्पनी की ओर से निर्माण कार्य शुरू किया गया था मगर कई तरह की स्वीकृतियां लेने के बावजूद किसी न किसी कारणवश प्रोजेक्ट के कार्य में बाधा आती रही। इस निर्माण के लिये कम्पनी की ओर से जो 11 मंजिला ढांचे का निर्माण किया गया उसमें दो मंजिल को स्वीकृत प्लान के विपरीत पाया गया। इस कारण यह प्रोजेक्ट अभी तक औपचारिकताओं में ही उलझा हुआ है। नगर निगम ने स्कैंडल प्वाइंट, रिज मैदान और माल रोड पर रंगीन पत्थर लगाने की बात कही थी। एशियन डेवलपमेंट बैंक इस योजना को फाइनेंस कर रहा है। इस योजना के लिये धनराशि का इंतजाम भी कर लिया गया लेकिन न जाने किन कारणों के चलते अभी तक इस प्रस्ताव पर काम शुरू नहीं हो पाया है। ❑

मस्जिद का अवैध निर्माण

विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत उपाध्यक्ष अमनपुरी ने शिमला से जारी एक प्रेस वक्तव्य में कसुम्पटी में अवैध रूप से बन रही मस्जिद पर कड़ा एतराज जताया है। उन्होंने कहा कि अवैध रूप से बन रही इस मस्जिद से वहां का स्थानीय हिन्दू समाज आक्रोशित है। पिछले दिनों भारी संख्या में कसुम्पटी के स्थानीय लोग, विभिन्न सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता इस विषय पर कमीश्नर से मिले।

कसुम्पटी में किये जा रहे इस अवैध निर्माण की भनक यहां के प्रशासन व शासन को भी नहीं है। यहां पर प्रतिदिन बाहरी राज्यों के मुसलमान आ रहे हैं। यहां के शासन, प्रशासन को इस बात की जानकारी नहीं है कि ये लोग घुसपैठिये हैं या आतंकवादी। अगर प्रशासन समय पर नहीं जागा तो ये लोग किसी बड़ी घटना को भी अंजाम दे सकते हैं जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। ❑

स्वामी विवेकानन्द सार्द्ध शती की शुभकामनाओं सहित

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़ एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद) पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

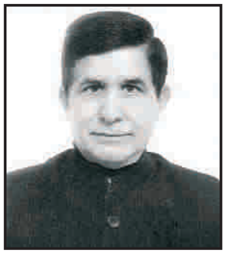

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर

गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)

Phone : 94184-88660, 94592-88323

जनप्रतिनिधि को यदि दो साल की सजा तो सदस्यता समाप्त

सुप्रीम कोर्ट ने राजनीति से अपराध की गंदगी मिटाने के लिये 10 जुलाई को ऐतिहासिक फैसला सुनाया जिसके तहत अब सांसद-विधायक निचली अदालत में दोषी करार दिये जाने की तिथि से ही अयोग्य हो जाएंगे।

आपराधिक मामलों में दोषी ठहराए गए सांसदों और विधायकों की सदस्यता समाप्त करने सम्बंधी फैसला सुनाकर सर्वोच्च न्यायालय ने वह काम किया है, जिसकी जिम्मेदारी संसद की थी। उसका यह फैसला राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त करने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है, जिससे उम्मीद बंधती है कि आपराधिक छवि वाले नेताओं को संसद और विधानसभाओं में जाने से रोका जा सकेगा। सर्वोच्च अदालत ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा चार के उन विवादास्पद प्रावधानों को 'अल्ट्रा वायरस' बताकर निरस्त कर दिया है, जिसकी वजह से आपराधिक मामलों में दोषी ठहराए जाने के बावजूद दागी निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी सदस्यता बचाए रखने में कामयाब हो जाते थे। यह प्रावधान संविधान की मूल भावना के ही खिलाफ था, जिसमें सभी को बराबरी का अधिकार दिया गया है। चुनाव सुधार की बातें तो बीते चार दशकों से हो रही हैं, पर अभी तक कोई कारगर कदम नहीं उठाया जा सका है। नतीजतन आज देश के कुल 4,835 सांसद-विधायकों में से 1,448 ऐसे निर्वाचित जनप्रतिनिधि भी हैं, जिन पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। यही नहीं, मौजूदा संसद में 76 सांसद ऐसे हैं, जिनके खिलाफ गम्भीर आरोप हैं और यदि वे साबत हो जाएं तो उन्हें पांच वर्ष से भी अधिक की सजा हो सकती है, जबकि मौजूदा कानून किसी भी सामान्य व्यक्ति को दो वर्ष से अधिक की सजा सुनाए जाने पर चुनाव लड़ने से ही वंचित कर देता है। इस मामले में सुनवाई के दौरान सरकार ने तर्क दिया था कि यदि आपराधिक मामले में दोषी ठहराए गए सदस्यों की सदस्यता रद्द कर दी जाएगी, तो खासतौर से ऐसी सरकारों के समक्ष स्थिरता का संकट पैदा हो सकता है, जो थोड़े बहुमत से सत्ता में होती हैं। सर्वोच्च अदालत ने उसका यह तर्क खारिज कर पूरे राजनीतिक वर्ग को आईना दिखाने का काम किया है। सच यह है कि किसी भी सियासी दल का रवैया इस मामले में सकारात्मक नहीं रहा है, वरना संसद से अब तक कोई कड़ा कानून पारित हो गया होता। बेशक यह एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन यह भी जरूरी है कि पर्दे के पीछे चलने वाले खेल पर भी अंकुश लगाया जाए और राजनीति में काले धन के प्रवाह को रोका जाए। ❑

खुद हिन्दी सीख दूसरों को सिखा रही

दस साल पहले पाकिस्तान से बहू बनकर भारत आई पाकिस्तानी लड़की ताहिरा अपने घर-परिवार में भाषा को लेकर अक्सर मुश्किल में पड़ जाती थी। उसे उर्दू जुबान आती थी और यहां हिन्दी और पंजाबी का बोलबाला था। लेकिन फिर उसने हिन्दी बोलने और सीखने की ठानी। उसकी मेहनत रंग लाई और आज वह दूसरों को हिन्दी पढ़ा रही है। जिला गुरदासपुर के कस्बा कादियां में चौधरी मकबूल के साथ 2003 में निकाह के बाद ताहिरा मकबूल बन गई। उनके तीन बच्चे हैं और वह घर में अपने बच्चों के साथ-साथ आसपास के बच्चों के लिये भी कक्षा लगाकर हिन्दी पढ़ा रही है। ❑

जाति आधारित रैलियों पर रोक

अदालत ने राजनीतिक दलों को एक और झटका देते हुए जातीय आधार पर होने वाली रैलियों और सम्मेलनों पर रोक लगा दी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच का दिया गया यह फैसला भले ही अपने सीमा क्षेत्र उत्तर प्रदेश में लागू हो लेकिन इसका संदेश दूर तलक जाएगा। जातीय राजनीति से सराबोर तमाम देशों में साफ-सुथरी व्यवस्था को बनाने में नजीर का काम करेगा।

हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने राजनीतिक दलों द्वारा जातीय आधार पर आयोजित होने वाली रैलियों पर रोक लगाते हुए उन्हें नोटिस भी जारी किया है। जस्टिस उमानाथ सिंह एवं जस्टिस महेंद्र दयाल की बेंच ने यह आदेश जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान दिया है। याची का कहना है कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियां जातिगत आधार पर रैलियों का आयोजन करती है। ऐसी रैलियों से सामाजिक विघटन पैदा होता है तथा आम जनता के बीच जातीय आधार पर भेदभाव का वातावरण पैदा होता है जो विधि विरुद्ध है। याचिका का कहना है कि संविधान में सभी नागरिकों को समान रूप से अधिकार दिये गए हैं। उनके बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया गया है। याचिका में मांग की गई है कि जातीय आधार पर रैलियों का आयोजन करने वाली राजनीतिक पार्टियों पर प्रतिबंध व उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगाई जाए। ❑

मंदिरों को सरकारी कब्जे से मुक्त किया जाना चाहिये

देश के पूर्व न्यायधीशों व अधिवक्ताओं ने मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण को अवैध करार दिया है। कानूनविदों का मानना है कि मंदिरों का प्रबंधन धर्माचार्यों की अनुमति से तय व्यवस्था के तहत होना चाहिये। रविवार को यहां इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण-संवैधानिक मुद्दे विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ये विचार जताए गए। संगोष्ठी का आयोजन हिन्दू धर्म आचार्य सभा ने किया था।

संगोष्ठी में स्वामी दयानंद ने कहा कि राजाओं, शासकों ने मंदिरों की पूजा-अर्चना के संचालन के लिये अपार सम्पत्ति दे दी। उन्होंने कहा कि मंदिर हमारे संस्कृति कोष हैं क्योंकि हर मंदिर में अनूठा विग्रह और आचार है। लेकिन मंदिरों की विपुल सम्पत्ति का उचित इस्तेमाल नहीं हो रहा। इस मौके पर सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट अमन लेखी ने कहा कि सरकार मंदिरों की प्रशासनिक व्यवस्था नियमित कर सकती है। लेकिन उसे मंदिरों पर कब्जे का हक नहीं है। लेखी ने कहा कि सरकार को केवल मंदिरों के ट्रस्टी बदलने का अधिकार है। पूर्व गवर्नर व कर्नाटक हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस रमा जोइस ने मंदिरों को प्रिजर्व बैंक ऑफ हिन्दूइज्म का नाम दिया।

सुप्रीम कोर्ट की एडवोकेट पिंकी आनन्द ने कहा कि सरकार द्वारा मंदिरों को कब्जे में लेना और धार्मिक रीति-रिवाजों के लिये धनराशि को मंजूरी देना असंवैधानिक है। उनके अलावा पूर्व मुख्य न्यायाधीश वीए कोकजे, एडवोकेट व जनता पार्टी के अध्यक्ष सुब्रमण्यम स्वामी और पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जीवीजी कृष्णमूर्ति सहित अन्य वक्ताओं ने भी संवैधानिक व सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न फैसलों के हवाले से मंदिरों पर नियंत्रण को अवैध ठहराया। ❑

प्रदेश की तीन कम्पनियों की दवा खराब

देश भर में 18 नामी फार्मा कम्पनियों की दवाइयों के सैम्पल फेल हो गए हैं, इनमें तीन फार्मा कम्पनियां हिमाचल की हैं। गुणवत्ता मानक पर खरा न उतरने वाले दवा उत्पादों के ये मामले गुवाहाटी, कोलकाता, चंडीगढ़ व चेन्नई की प्रयोगशालाओं में किये गए परीक्षण के दौरान सामने आए हैं। केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने मामलों के सामने आते ही ड्रग अलर्ट जारी कर दिया है। देश भर के राज्य दवा नियंत्रक प्राधिकरणों को तत्काल इन दवाइयों को बाजार से हटाने के निर्देश दिए गए हैं। भारत सरकार दवा महानियंत्रक के निर्देशों के बाद राज्य दवा नियंत्रक प्राधिकरण भी हरकत में आ गया है और सम्बंधित कम्पनियों को नोटिस जारी कर कार्रवाई शुरू कर दी है। हिमाचल की सोलन, बद्दी व झाड़माजरी स्थित कम्पनियों की दवाइयां फेल पाई गई हैं। इसके अलावा सिक्किम, महाराष्ट्र, रुद्रपुर उत्तराखंड, प्रीतमपुरा, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अम्बाला कैंट, करनाल, जम्मू, आंध्र प्रदेश व चेन्नई की कम्पनियों की दवाओं के सैम्पल भी फेल पाए गए हैं। इसके बाद देश भर में ड्रग अलर्ट जारी किया गया है, जिसका मकसद इन दवाइयों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाना है। ❑

म्यांमार के मुसलमान बसाए गए जम्मू में

कश्मीर के बाद अब हिन्दू बाहुल्य जम्मू में इस्लामीकरण का प्रयास हो रहा है और वह भी सरकार की जानकारी के बावजूद। आपको याद होगा कि म्यांमार में अलग मुस्लिम प्रदेश की मांग करने पर वहां के बौद्धों ने इसकी कड़ी प्रतिक्रिया प्रकट की और इसमें हजारों मुसलमान मारे गए और लाखों मुसलमान अपना घर-बार छोड़ने को विवश हैं। अब एक सुनियोजित तरीके से इन मुसलमानों को जम्मू-कश्मीर के जम्मू इलाके में बसाया जा रहा है। वहां की सरकार ने विधानसभा में एक प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया है कि जम्मू के बार नरवाल इलाके में 407 और छनिराम इलाके में 28 परिवारों के 2036 लोगों को बसाया गया है। गैरसरकारी रूप से इनकी संख्या 782 परिवार और 5000 सदस्यों की बताई जा रही है। आदत अनुसार, यहां बसाए गए म्यामारी मुसलमानों ने अपने इलाकों के हिन्दू नाम बदलने भी शुरू कर दिये हैं। अब नरवाल को इस्लामाबाद कहा जाने लगा है। इसी तरह मुसलमान बहुल्य हो गए बस्तियों के नाम जलालाबाद, फिरदौसपुर, कासिमनगर, रमजानपुर आदि हो गए हैं। जम्मू-कश्मीर की सरकार ने इन लोगों की सहायता पर आयकर में छूट दे रखी है। ❑

अपने ही बुने जाल में...

राजनीतिक नफे नुकसान के गणित में डूबी रहने वाली मनमोहन सरकार किस तरह मुस्लिम वोटों की खातिर देश की सुरक्षा से खिलवाड़ कर रही है, इसका सबसे ताजा उदाहरण है इशरत जहां मामले की सीबीआई जांच है। लेकिन इस मामले में सरकार अपने ही बुने जाल में फंसती नजर आ रही है।

मुठभेड़ को 'फर्जी' बताने वाले इस आरोप पत्र में कई बिन्दू ऐसे हैं जो सीबीआई की जांच के किसी 'इशारे' पर आगे बढ़ने की भनक देते हैं। कुछ सवाल हैं, जो देश की सुरक्षा के लिहाज से बेहद अहम हैं। पहला, सीबीआई ने गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत खुफिया एजेंसी आईबी के उस निष्कर्ष पर आगे जांच क्यों नहीं की कि मारे गए वे चारों लोग उस लश्करे तोयबा नाम के जिहादी गुट के आतंकी थे जो सीमा पार से देश में जिहाद रच रहा है? भाजपा के इस आरोप में दम है कि सीबीआई का मारे गए लोगों की पृष्ठभूमि का खुलासा न करना आश्चर्य पैदा करता है। पार्टी का आरोप है कि सरकार सीबीआई को मामले के बारे में दिशानिर्देश दे रही है। कांग्रेसनीत सरकार भाजपा, नरेन्द्र मोदी और उनके सहयोगियों को इस सब में फंसाने की मंशा रखती है। नहीं तो क्या वजह है कि 6 अगस्त, 2009 को केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा मारे गए चारों के लश्कर के आतंकी होने सम्बंधी गुजरात उच्च न्यायालय में दिया हलफनामा महज दो महीने बाद ही उस वक्त के गृहमंत्री चिदम्बरम के कथित दबाव के बाद बदल गया और इशरत और उसके साथियों के आतंकवादी होने के बारे में पक्के सबूत न होने की बात करते हुए सीबीआई जांच को अपनी सहमति दे दी गई? क्या इसमें ओछी राजनीति की दुर्गंध नहीं आती? भाजपा महासचिव रविशंकर प्रसाद का कहना है कि सरकार नरेन्द्र मोदी को उलझाने के लिये देश की सुरक्षा को दाव पर लगा रही है। चिदम्बरम के कथित दबाव पर बदला गया हलफनामा, जाहिर है नरेन्द्र मोदी को मामले में कहीं न कहीं जुड़ा दिखाने की ही कवायद थी।

ताजा घटनाक्रम में इशरत के आतंकी होने के बारे में हेडली के बयान को छुपाने की एनआईए की कोशिशों की आईबी ने हवा निकाल दी है। आईबी द्वारा लीक किये गए 13 अक्तूबर 2010 के एनआईए के नोट के अनुसार 2005 में लश्कर के ऑप्रेशन हेतु जकीर-उर- रहमान लखवी ने हेडली को मुजामिल से मिलाया था। अब एनआईए के अधिकारी और गृहमंत्री शिंदे इस बारे में कुछ बोलने से कतरा रहे हैं।

लेकिन अब अंदरखाने यह बात सामने आई है कि गृह मंत्रालय ने इशरत और उसके साथियों को लश्कर के आतंकी साबित करने की तैयारी कर ली है। मंत्रालय के अधिकारियों ने माना है कि आईबी के अधिकारियों की इस बात की पुष्टि करनी है कि इशरत और उसके साथी आतंकी थे। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी की टिप्पणी है कि जावेद आईबी को आतंकियों की गतिविधियों की जानकारी देता था। साथ ही, इशरत के साथ मारे गए दो पाकिस्तानियों की बाबत कोई कुछ क्यों नहीं बता रहा? पुख्ता जानकारी के आधार पर ही आईबी के उस वक्त के संयुक्त निदेशक राजेंद्र कुमार ने गुजरात पुलिस को सावधान किया था। गृह मंत्रालय के उस अधिकारी का कहना है कि राजेंद्र कुमार निर्दोष है और राजनीति की बिसात पर उनको मोहरा बनाया जा रहा है। उनके साथ ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी को इस सब में फंसाने की गरज से ही हलफनामा बदला गया था। लेकिन जरूरत पड़ी तो अदालत को सीबीआई के खिलाफ इशरत और उसके साथियों के आतंकवादी होने के सारे सबूत दिये जाएंगे। अगर इस तरह देश की गुप्तचर एजेंसियों पर अंगुली उठाई जाएगी तो उनकी साख पर असर पड़ेगा। इससे देश की आंतरिक सुरक्षा पर भी खतरा पैदा होगा। कोई खुफिया अधिकारी फिर किसी राज्यों को गुप्तचर सूचनाएं देने से कतराएगा। ❑

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob. 98059-33644

Dr. Akshey Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (GoldMedalist)
MS (MAMC Delhi), Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available : General & Specialist OPD, Indoor Admission facilities, Fully equipped operation Theatre, All Major & MinorOperations, Laproscopic gall bladder Remobal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

महाबोधि मंदिर पर आतंकी कहर

बोधगया के महाबोधि मंदिर पर आतंकी हमले ने हमारी आतंकवाद विरोधी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की पोल खोल दी है। रात के अंधेरे में उन्होंने 13 जीवित बम फिट कर हमारी सुरक्षा व्यवस्था को भनक तक न लगने दी। अभी तक हम इस सुरक्षा चूक के सुराग तक पहुंच नहीं पाए हैं। हमारे प्रधानमंत्री हर बार कहते हैं कि ऐसे आतंकवादी हमले बर्दाश्त नहीं किये जाएंगे। आतंकियों को यह समझ है कि भारत सिर्फ बर्दाश्त ही कर सकता है, प्रत्युत्तर नहीं दे सकता इसलिये आतंकियों के हौसले बुलंद है तथा वे कभी मुम्बई तो कभी पुणे में कभी बैंगलूरू में तो कभी बिहार में आतंकी हमलों को अंजाम देकर निर्दोष भारतीयों को मौत के घाट उतार रहे हैं।

बोधगया में किये गए सीरियल धमाकों ने हमारी सुरक्षा एजेंसियों एवं केन्द्र राज्य सरकारों के कार्यकलाप पर भी प्रश्नचिन्ह लगाए हैं। आईवी ने पुणेवेकरी ब्लास्ट में गिरफ्तार आतंकियों से पूछताछ के दौरान यह सूचना दी थी कि बिहार में बोधगया, मुम्बई का सिद्धिविनायक मंदिर उनके निशाने पर है। फिर चूक कहां हुई क्यों नहीं बिहार सरकार ने पर्याप्त सुरक्षा कदम उठाए? पुणे ब्लास्ट में गिरफ्तार आतंकियों के दरभंगा बिहार सम्बंधों पर भी बिहार सरकार ने तब घोर आपत्ति उठाई थी। मुम्बई में म्यांमार के रोहिग्यां मुसलमानों के संघर्ष के समर्थन में हुई प्रदर्शन रैली के मध्य तोड़फोड़ एवं भगधड़ के समय भी आई.वी. ने आगे आतंकी हमलों की सूचना दी थी परन्तु बिहार सरकार ने अल्पसंख्यक वोटों की खातिर पूछताछ के नाम पर लीपापोती ही की।

सबसे हास्यास्पद बयान तो श्री दिग्विजय सिंह का आया जिन्होंने सुरक्षा एजेंसियों, विरोधी दलों एवं जनता को जल्दी से किसी निर्णय पर पहुंचने की नेक सलाह दी। अफगानिस्तान स्थित वामियान में तालिबानों द्वारा भगवान बुद्ध के विशाल प्रतिभा को तोपों से नेस्तनाबूद करने के पीछे क्या मंशा है। अक्षरधाम अहमदाबाद, अयोध्या काशी में मंदिरों में सीरियल ब्लास्ट कराकर आतंकवादी क्या संदेश देना चाहते हैं? आतंकियों ने सरकार की कमजोरी पकड़ ली है कि वह बर्दाश्त कर सकती है प्रत्युत्तर नहीं दे सकती। ❑ **–सुभाष चंद्र सूद**

बाबा रामदेव ने किया युवाओं को राष्ट्र निर्माण हेतु प्रेरित

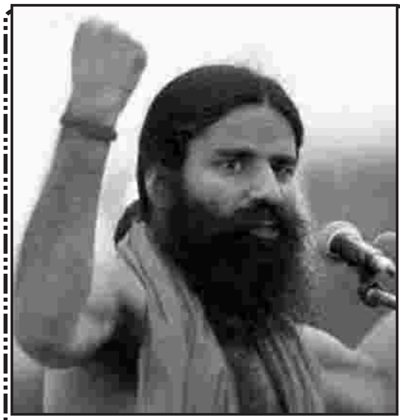

हमीरपुर में भारत स्वाभिमान युवा भारत प्रांतीय सम्मेलन का आयोजन किया गयां इसमें बाबा रामदेव ने कहा कि राष्ट्रनिर्माण के संगठन हेतु ग्राम निर्माण जरूरी है। योग शिक्षा को देश में लागू करने के लिये एकजुट हो जाएं। सम्मेलन में पहुंचे अनिल कुमार ने बताया कि बाबा रामदेव ने उनसे पूछा कि वह शादीशुदा हैं, तो उन्होंने मना किया। बाबा ने कहा कि सुखदेव, राजगुरू, भगत सिंह ने भी अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देश सेवा की। राष्ट्र निर्माण के लिये आपका सहयोग जरूरी है। प्रमोद कुमार व प्रशांत शर्मा ने बताया कि बाबा रामदेव ने उन्हें हरिद्वार आने का न्योता दिया है, वह जाएंगे।

रामदेव ने कहा कि मैं कभी कोई चुनाव नहीं लड़ूंगा और न ही कभी कोई राजनीतिक पद ग्रहण करूंगा। चाहे दो साल लगे, दस साल या पूरा जीवन लगे, भारत को आध्यात्मिक व आर्थिक महाशक्ति बनाना संकल्प है। उन्होंने युवाओं से कहा कि योग व अध्यात्म से जब देश ठीक हो जाएगा, तब सब कुछ ठीक होगा। उन्होंने नरेन्द्र मोदी को बेहतर नेता करार देते हुए युवाओं से सहयोग की भी अपील की। उन्होंने 100 युवाओं को राष्ट्रीय सम्मेलन के लिये हरिद्वार पहुंचने के लिये टिप्स दिये व उन्हें राष्ट्र निर्माण की जानकारी दी। बाबा रामदेव ने पतंजलि योगपीठ के घरेलू उपचार बात रोग, कफ रोग, उच्च रक्तचाप सहित कई बीमारियों के प्रति जागरूक किया। ❑

आपकी लापरवाही कहीं भटका न दे दिशा

इस देश की शिक्षा प्रणाली अभी भी ऐसी है जहां लोग पढ़-लिखकर नौकरी पाने को पहली प्राथमिकता समझते हैं। कई बार जल्दी नौकरी पाने की छात्र की खुद की चाहत होती है तो कई बार इसके लिये उनके ऊपर पारिवारिक दबाव भी होता है। इसे लेकर उनके अन्दर असमंजस की स्थिति आ जाती है। उनके मनोभावों को समझते हुए ही देश में कई तरह के पेशेवर पाठ्यक्रमों का उदय हुआ है। वैसे तो इन पेशेवर पाठ्यक्रमों की सूची बहुत बड़ी है और छात्र इस उलझन में रहते हैं कि वे क्या चुनें। लेकिन यदि छात्र थोड़ी सी अपनी जानकारी बढ़ाएं तो इंटरनेट व 'करियर काउंसलर' के जरिये उन्हें कई तरह के विकल्पों का पता चल सकता है। आमतौर पर बारहवीं के बाद छात्र बीए, बीएससी व बीकॉम की ओर रुख करते हैं लेकिन उससे इतर एक दुनिया पेशेवर पाठ्यक्रमों की भी है। उनके सामने तीन बड़े क्षेत्र जैसे चिकित्सा (मेडिकल), अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) व प्रबंधन (मैनेजमेंट) है। इनमें से किसी को भी अपने लिये चुन सकते हैं। ये तीनों ही क्षेत्र तेजी से अपना दायरा फैला रहे हैं। साथ ही रोजगार देने के मामलों में भी किसी से पीछे नहीं है। यही कारण है कि हर साल लाखों की संख्या में लोग इसकी ओर आस लगाए रहते हैं। आज हर क्षेत्र अपने यहां कुशल लोगों को वरीयता दे रहे हैं। इसे देखते हुए पेशेवर पाठ्यक्रम काफी कामगर साबित हो रहे हैं। क्योंकि ये पाठ्यक्रम उन्हीं क्षेत्रों को ध्यान में रखकर सैद्धांतिक व प्रायोगिक रूप से तैयार किये गए होते हैं। पेशेवर पाठ्यक्रमों के चयन में कई तरह की सावधानी बरतने की जरूरत होती है। आइए, इस बार यह जानने का प्रयास करते हैं कि चिकित्सा, अभियांत्रिकी या प्रबंधन के क्षेत्र में आप किस प्रकार प्रवेश पा सकते हैं।

चिकित्सा क्षेत्र

भारतीय परिदृश्य में डॉक्टर को तो भगवान का दूसरा रूप माना जाता रहा है। यही कारण है कि बचपन से ही लोगों को इस क्षेत्र अथवा पेशे के बारे में पता होता है। आईटी और अन्य क्षेत्रों की बढ़ती धमक भी मेडिकल क्षेत्र को हिला नहीं पाई। आज भी एक बड़ी संख्या में लोग डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करना चाहते हैं। इस क्षेत्र में जाने के इच्छुक छात्रों को खुद को कई तरह से तैयार करना होता है। मसलन उनकी डॉक्टरी के पेशे में रूचि रहेगी तभी वे इसमें आगे बढ़ पाएंगे। यदि वे किसी कोचिंग सेंटर से तैयारी करना चाहते हैं तो उन्हें उस कोचिंग सेंटर के बारे में अच्छी तरह पता लगा लेना चाहिये। अध्ययन सामग्री के चयन में भी उन्हें पूरी सावधानी बरतनी होगी। आपके वरिष्ठ इसमें काफी मदद पहुंचा सकते हैं।

किस रूप में अवसर

सामान्य तौर पर एमबीबीएस (बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड बैचलर ऑफ सर्जरी) अथवा बीडीएस (बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी) की उपाधि साढ़े पांच साल के अंतराल में ही मिलती है। साढ़े पांच साल तक सफल तरीके से अध्ययन करने पर मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त डॉक्टर की उपाधि मिल जाती है। चार वर्ष तक छात्रों को तमाम तरह की चिकित्सकीय जानकारियां उपलब्ध कराई जाती हैं। इसमें प्रवेश तभी मिल पाता है जब छात्र ने बारहवीं कक्षा जीव विज्ञान विषय और 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की हो। एमबीबीएस की उपाधि मिल जाने के बाद एमडी (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन) अथवा एमएस तथा पीएचडी का रास्ता खुल जाता है। आगे चलकर अध्ययन का विकल्प भी सामने आ जाता है। एमबीबीएस, एमडी के अलावा पैरामेडिकल, माइक्रोबायोलॉजी, आयुर्वेद, रेडियोग्राफी, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, डेंटिस्ट आदि में भी अवसर मिलता है।

प्रमुख प्रवेश परीक्षाएं

- राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (एनईईटी)।
- ऑल इंडिया प्री मेडिकल अथवा प्री डेंटल टेस्ट।
- कम्बाइंड प्री मेडिकल टेस्ट (सीपीएमटी)
- एम्स एमबीबीएस
- दिल्ली प्री मेडिकल टेस्ट (डीपीएमटी)
- एएफएमसी, पुणे डीयू एमईटी

क्या है एनईईटी

एनईईटी एक सम्मिलित मेडिकल प्रवेश परीक्षा है और इसे इसी साल से शुरू किया गया है। एनईईटी की शिक्षा पद्धति स्नातक पूर्व और परास्नातक के छात्रों के लिये अलग-अलग है। ऐसा माना जा रहा है कि आने वाले समय में ऑल इंडिया प्री मेडिकल टेस्ट (एआईपीएमटी), यूपी सीपीएमटी, राजस्थान पीएमटी, दिल्ली पीएमटी, आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल कॉलेज एग्जाम व राज्यस्तरीय कई अन्य परीक्षाएं समाप्त हो जाएंगी तथा इनकी जगह पर छात्रों को एनईईटी परीक्षा में बैठने की अनुमति मिलेगी।

प्रमुख चिकित्सा संस्थान : ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली, क्रिश्चन मेडिकल कॉलेज, वेल्लौर, आर्म्ड फोर्स मेडिकल कॉलेज, पुणे, जेआईपीएमईआर, पांडिचेरी, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली, कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज चेन्नई आदि। ❑

गो सेवा का जुनून

भोपाल के अनिल दुबे ने मेकैनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने के बाद नौकरी करनी शुरू की थी। लेकिन कुछ साल बीते नहीं कि रोजी-रोटी की आवश्यकता जुनून के आगे छोटी पड़ गई। एक अनाथ बछिया की पीड़ा ने उन्हें इतना उद्वेलित किया कि वे गो-भक्त से गो-सेवक बन गए। 38 वर्षीय अनिल दुबे गो-सेवा से अपना सब कुछ दांव पर लगा चुके हैं। गाय में अब इन्हें माता ही नहीं, परिवार, समाज और राष्ट्र सब कुछ दिखता है। वे हर समस्या का समाधान गाय में देखते हैं।

कौन नहीं जानता कि गाय सिर्फ दूध से ही नहीं, अपने मल-मूत्र से भी व्यक्ति-परिवार का भरण-पोषण करती है। वह खेत-खलिहान को आबाद रखती है। बीमार को स्वस्थ करती है और स्वस्थ को अनेक बीमारियों से बचाती हैं। अनिल गो-माता की उपेक्षा को राष्ट्रद्रोह मानते हैं।

वे सिर्फ बातों से गो-भक्ति का ज्ञान नहीं बघारते। वे गो-सेवा के लिये लोगों को बाध्य करते हैं। इनका तरीका बहुत नायाब है। चूंकि वे ज्योतिष के जानकार हैं, इसलिए समस्याग्रस्त लोग इनके पास आते ही हैं। इनमें अधिकांश ऐसे होते हैं जो अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए अनेक प्रयोग और प्रयास कर चुके होते हैं। थके और निराश लोगों को वे गो-माता के हवाले कर देते हैं। कुछ को गो-मूत्र तो कुछ को गो-अर्क पीने की सलाह देते हैं। निराश लोग किडनी रोग, हृदय रोग, थायरायड, मधुमेह और माइग्रेन जैसी बीमारियों से निजात पा रहे हैं। अनिल दुबे के प्रयास से गाय के गोबर से खास तरह के कंडों का प्रयोग चल रहा है। बकौल अनिल दुबे, इन कंडों की मांग इतनी है कि हम आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। अब अगला प्रयोग धूपबत्ती और अगरबत्ती का है। देशी गाय के घी, दूध और इससे बने उत्पादों की कमी भले ही हो, लेकिन ये अनेक बीमारियों की रामबाण दवाइयां हैं। वे श्री सत्यनारायण गो-जन कल्याण सेवा समिति के नाम से गो-सेवा को संस्थागत रूप देने की कोशिश कर रहे हैं। श्री दुबे यह भी कहते हैं कि गाय की सेवा और संरक्षण मनुष्य जाति के अस्तित्व के लिये जरूरी है। यदि गाय नहीं बचेगी तो हम भी नहीं। ❑

पानी बचाने के 'सुलभ' अनूठे प्रयोग

पानी बचाने के लिये प्रसिद्ध गैर-सरकारी संगठन सुलभ इंटरनेशनल ने बहुत अच्छा काम किया है। सुलभ ने पानी कम खर्च करने वाली 'टायलेट सीट' का निर्माण किया है। जहां भी सुलभ शौचालय है वहीं ऐसी ही सीटें लगी हैं। सुलभ की 'टायलेट सीट' की नकल कोई भी राजमिस्त्री कर सकता है। सीट के नीचे 'वाटर सील' होती है। सुलभ ने इस सील को ऐसा बनाया है कि कम पानी से ही पूरा मल नीचे चला जाता है। सुलभ के कम पानी खर्च करने वाले 'फ्लश' से आधा पानी लगता है। सुलभ के शौचालयों में इस्तेमाल होने वाला पानी भी बेकार नहीं जाता है। उस पानी को जमीन के अन्दर एक टंकी में जमा किया जाता है। कई प्रक्रियाओं के बाद उसे साफ किया जाता है और वही पानी फिर से शौचालयों में प्रयोग होता है। ❑

रिक्शा चालक ने लौटाया एक करोड़ नब्बे लाख का चेक

अहमदाबाद के एक ऑटो चालक ने कमाल की ईमानदारी का परिचय दिया है। इस रिक्शा चालक ने उसके नाम का 1.90 करोड़ रुपये का चेक लौटा दिया है। उसे यह चैक साणंद में टाटा नैनो प्लांट के लिये आबंटित की गई तीन बीघा जमीन के एवज में मिला था। राजू भरवाड़ ने यह राशि अपनी जेब में डाल ली होती लेकिन उसने लिखित में यह कहा कि वह अब जमीन का मालिक नहीं है। उसने यह आश्वासन भी दिया कि नए मालिकों के नाम आधिकारिक दस्तावेज में दर्ज हैं। राजू के परिवार की साणंद में 10 बीघा जमीन थी। तीस साल पहले उसके दादा ने करीब पांच लाख रुपये में तीन बीघा जमीन बेच दी। इस जमीन पर 40 परिवारों ने मकान बना लिए। बाद में नैनो गुजरात आई। इससे जमीनों के भाव आसमान छूने लगे। गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) ने नैनो प्लांट के आसपास की जमीन 28 लाख रुपये बीघा के भाव से अवाप्त कर ली और जमीन के मालिकों को पैसे चुकाने शुरू कर दिए। चूंकि नए मालिकों ने अपने नाम दर्ज नहीं कराए थे इसलिए रिकॉर्ड में ज़मीन राजू व उसकी मां बालूबे के नाम ही थी।

अपनी पत्नी, तीन बच्चों व मां के साथ दो कमरों के घर में रहने वाले राजू का कहना है, ईमानदारी से बढ़िया कोई चीज नहीं। मेरे माता-पिता ने मुझे यही सिखाया है। राजू के परिवार ने उसे सही कदम उठाने को कहा। मेरे नाम चार बीघा जमीन है जो भविष्य को देखते हुए मेरे परिवार के लिये पर्याप्त है। वहीं ***जीआईडीसी के एक अधिकारी ने कहा, हमने जमीन विवाद के कई मामले देखे हैं लेकिन किसी को 1.90 करोड़ रुपये का चेक लौटाते नहीं देखा।*** ❑

राष्ट्रघोष

अदम्य राष्ट्र के लिये
अखण्ड भक्ति चाहिये
प्रचण्ड शक्ति चाहिये।
बढ़े विकास की प्रखर
नवीन ज्योति ला सकें,
नये विचार की असीम
चेतना जगा सकें।
अडोल राष्ट्र के लिये
अतोल त्याग चाहिये,
अमोल आग चाहिये।
गढ़ें नया स्वरूप
शौर्य की अमोघ रीति का,
बहे अथाह स्रोत प्राण
प्राण की प्रतीति का।
अमन्द राष्ट्र के लिये
अजस्र वीर चाहिये,
सहस्र वीर चाहिये।
करें विराट कर्म का
पुनीत यज्ञ शान से,
ललाट हर दमक उठे
समर्थ स्वाभिमान से।
अजेय राष्ट्र के लिये
अनन्त प्रीति चाहिये,
ज्वलंत नीति चाहिये।
लड़ें विपत्ति से रखें
प्रबल उदार भावना,
बुलन्द हो दिगन्त में
स्वदेश की उपासना।
अशेष राष्ट्र के लिये
अटूट प्रेम चाहिये
अटूट प्रेम चाहिये।
(साभार राष्ट्रधर्म)

मेरा भारत महान

जन्म लेने को जहां,
तत्पर रहते हैं भगवान।
कृष्ण, राम अवतरित हुए,
आए जहां महावीर, हनुमान।
पवित्र भारत भूमि पर जन्मा,
हर भारतीय है भाग्यवान।
गर्व से होता सीना चौड़ा,
मेरा भारत देश महान!
ऋषि मुनियों की ये धरती,
सभी जन हैं एक समान।
खुशियां मनाते मिलकर सभी,
जब आते होली, दीवाली, रमजान।
तीज, पर्व मेलों पर जहां
सजती है हर एक दुकान।
स्वादिष्ट व्यंजनों की भरमार यहां,
पकते नित नए पकवान।
देशभक्तों, शूरवीरों की ये धरती,
हर सूरमा तैयार करने को बलिदान।
विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र
तिरंगा है जिस देश की शान।
हजारों वर्ष पुराना इतिहास हमारा,
नीवें हिला पाना नहीं आसान।
विश्व गुरु, पथ प्रदर्शक
वो है मेरा हिन्दुस्तान।

-**रामप्रसाद शर्मा**, कांगड़ा

वृक्ष

हरयाली फैलाता पेड़
देता वह शीतल छाया
छन-छन कर आती धूप
वृक्ष है ईश्वर का एक रूप।
फल फूल का यह दाता
किसको नहीं यह भाता
पवन चले अब मद्धम-मद्धम
बन जाता संगीत स्वरूप
वृक्ष है ईश्वर का एक रूप!
जीवन रक्षक है हमारा यह
सच्चा सखा हर प्राणी का
आश्रय देता पक्षी परिंदों को
सबको देता भोजन उनके अनुरूप
वृक्ष है ईश्वर का एक रूप!
सूखे अगर वृक्ष एक
लगाओ बदले में तुम चार
जग का पालनहार वृक्ष
वृक्ष है ईश्वर का एक रूप!

-के.सी. शर्मा

बेटियों के खिलाफ खड़ी मशीनें

❑ मनीषा सिंह

वे कहीं भी सुरक्षित नहीं। न गर्भ में, न उससे बाहर। हमारे दिलों में उनके लिये स्नेह सूख चला है और उसकी जगह निपट आक्रामकता ने ले ली है। एक समाज के तौर पर हम पुरुषवादी मानसिकता से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, जिसका खामियाजा बेटियों को भुगतना पड़ता है। ताजा मामला बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान और उनकी पत्नी गौरी खान के अजन्मे बच्चे से जुड़ा है। जो खबरें आई हैं, उनके मुताबिक शाहरुख और गौरी जानते हैं कि किराये की कोख यानी सरोगेट मदर के जरिये उनके घर जो तीसरा बच्चा आने वाला है, वह बेटा है। अजन्मे बच्चे के लिंग निर्धारण की जांच हमारे देश में कानूनी जुर्म है। यों तो महाराष्ट्र के स्वास्थ्य विभाग ने इस मामले की जांच के आदेश दे दिये हैं और यदि खान-दम्पति दोषी पाए जाते हैं तो मुमकिन है कि इसके लिये वे निर्धारित सजा के हकदार भी हों। जांच के बिना उन्हें कठघरे में नहीं खड़ा किया जा सकता, मगर इस खबर ने तकनीक के जरिए गैर-कानूनी तरीके से लिंग निर्धारण के मुद्दे की ओर एक बार फिर ध्यान खींचा है। पर यह अजीब बात है कि कानून और सजाएं होते हुए भी लोग चोरी-छिपे बेटियों से निजात पाने का हर नुस्खा अमल में ला रहे हैं। खासतौर से अमीर तबके का यह रवैया समझ से परे है कि बेटी हो या बेटा, उसकी परवरिश पर होने वाले खर्च की जब उसे कोई परवाह नहीं है, तो वह सिर्फ और सिर्फ बेटों की ही चाहत क्यों रखता है?धनी राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के रसूखदार दक्षिणी इलाकों में बेटों के मुकाबले बेटियों की जन्म दर बेहद कम है। शायद इन इलाकों की हजारों आलीशान कोठियों में अरसे से किसी बेटी की किलकारी न गूंजी हो।

अजीब बात है कि कानून और सजाएं होते हुए भी लोग चोरी-छिपे बेटियों से निजात पाने का हर नुस्खा अमल में ला रहे हैं। खासतौर से अमीर तबके का यह रवैया समझ से परे है कि बेटी हो या बेटा, उसकी परवरिश पर होने वाले खर्च की जब उसे कोई परवाह नहीं है, तो वह सिर्फ और सिर्फ बेटों की ही चाहत क्यों रखता है?

हम चाहें तो इस कुत्सित प्रवृत्ति के लिये विज्ञान और तकनीक को कठघरे में खड़ा कर सकते हैं। सरोगेसी और अल्ट्रासाउंड तकनीक ने इंसान को फिलहाल यह सुविधा दे दी है कि वह अपने बच्चे के लिंग का चयन कर सके, उसके लिंग का पता लगा सके और यदि वह बेटी है, तो उसे गर्भ में ही मारने के औजार भी विज्ञान ने दे दिये हैं। आगे चलकर डीएनए तकनीक के सहारे मुमकिन है कि लोग अपनी इस सोच के मुताबिक बच्चे को डिजाइन भी करवा लें। लेकिन गर्भ की विकृतियों का पता लगाने के मकसद से अल्ट्रासाउंड मशीनों का जो इस्तेमाल दुनिया में शुरू हुआ था, उसके बारे में तो शायद उसके आविष्कारकर्ता ने भी नहीं सोचा होगा कि भारत में इन मशीनों का ऐसा इस्तेमाल होगा। हमारी सरकार ने देश में कन्या भ्रूण हत्या के बढ़ते मामलों को देखते हुए लिंग परीक्षण को अपराध घोषित कर रखा है, लेकिन अल्ट्रासाउंड जांच करने वाले क्लीनिकों ने गर्भ की जांच की आड़ में चोरी-छिपे यह सच जानने और बताने का काम अब तक जारी रखा है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। शायद इसकी एक वजह कानूनों पर सख्ती से अमल का अभाव हो। यह सच हो सकता है, क्योंकि प्री-नैटल डायग्नॉस्टिक टेक्नीक (रेग्युलेशन एंड प्रिवेंशन ऑफ मिसयूज) एक्ट, 1994 वजूद में आने के दशक भर बाद तक किसी को इन मामलों में पकड़ कर सजा नहीं दी गई थी, जबकि इस बीच गर्भ में ही लाखों कन्या भ्रूणों को नष्ट करने की खबरें अखबारों में आती रहीं। इसके लिये पहली बार पलवल, फरीदाबाद में क्लीनिक चला रहे एक डॉक्टर और उसके सहायक को दोषी मान कर 2007 में हरियाणा की एक अदालत ने सजा सुनाई थी। उन्हें अपने क्लीनिक में भ्रूण की लिंग जांच करते हुए एक छापे के दौरान अक्तूबर, 2001 में रंगे हाथों पकड़ा गया था।

माना गया कि देश में करीब 50 लाख बेटियों की बलि चढ़ने के बाद इतिहास में पहली बार गर्भ में लिंग परीक्षण करने के दोषियों को सजा दी गई। इस सजा से यह उम्मीद भी की गई कि इससे हमारा समाज कुछ सबक लेगा और लैंगिक अनुपात में आते भयावह अंतर पर कोई रोक लग सकेगी। लेकिन हमारे देश में दस-बीस बरसों में कन्या भ्रूण हत्याओं का घातक ट्रेंड स्थापित हुआ है। सभी जानते हैं कि लैंगिक अनुपात में आई इस घनघोर तबदीली के सामाजिक-आर्थिक नतीजे बेहद डरावने हो सकते हैं, पर शायद ही कोई सबक लेने का इच्छुक दिखाई देता है। ❑

छाती में पानी का जमाव

❑ डॉ. के.के. पाण्डेय

छाती के अन्दर फेफड़े के चारों ओर पानी के जमाव को मेडिकल भाषा में 'प्ल्यूरल इफ्यूजन' या 'हाइड्रोथोरेक्स' कहते हैं। जब पानी की जगह खून का जमाव होता है तो इसे 'हीमोथोरेक्स' कहते हैं। जब 'लिम्फ' नामक तरल पदार्थ का जमाव होता है तो इसे 'काइलोथोरेक्स' कहते हैं। फेफड़े और छाती की दीवार के बीच खाली जगह होती है जिसमें फेफड़ा स्वतंत्र रूप से सांस लेने के वक्त नियमित रूप से फैलता और सिकुड़ता है। इस खाली जगह को मेडिकल भाषा में 'प्ल्यूरल स्पेस' कहते हैं।

छाती में पानी के जमाव का अपने देश में एक और मुख्य कारण कैंसर का रोग है। छाती में कैंसर की वजह से पानी जमा होने में तीन तरह के कैंसर प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। फेफड़े का कैंसर, दूसरा स्तन यानी ब्रेस्ट का कैंसर तथा तीसरा गिल्टी का कैंसर यानी लिम्फोमा। इन सबके अलावा दूसरे अन्य कारण भी छाती में पानी के जमाव के होते हैं जैसे जिगर की बीमारी यानी लिवर सिरोसिस, पेट में पानी यानी असाइटिस या फिर दिल की बीमारी। कुछ मरीजों में छाती के अन्दरूनी दीवार का ट्यूमर यानी मीजोथीलियोमा भी जिम्मेदार होता है।

छाती में पानी के जमाव के लक्षण :

- बुखार जो पसीने के साथ प्रतिदिन शाम को तेज हो जाता हो
- वजन में गिरावट
- सांस फूलना या सांस लेने में छाती में दर्द होना
- बलगम का आना
- शरीर को हिलाने में छाती में सरसराहट की आवाज होना।

इलाज में लापरवाही करें तो क्या होगा?

समय बीतने के साथ इस इकट्ठे हुए पानी के चारों ओर झिल्ली का निर्माण हो जाता है। यह झिल्ली एक तरफ तो पानी को सोखने नहीं देती तो दूसरी तरफ निकट स्थित फेफड़े के हिस्से को दबाती है जिससे फेफड़े की कार्यप्रणाली में बाधा पड़ती है। कभी-कभी पानी तो सूख जाता है पर उसकी जगह एक मजबूत ऊत्तकों का जाल बन जाता है जो फेफड़े के हिस्से को चारों ओर से जकड़ लेता है। इस दशा को मेडिकल भाषा में 'फाइब्रोथोरेक्स' कहते हैं। इसमें ऑपरेशन के माध्यम से जकड़े हुए फेफड़े को छुड़ाना पड़ता है। इसे जल्दी से जल्दी अगर निकाला नहीं गया तो खतरनाक स्थिति पैदा हो सकती है। कभी-कभी इस इकट्ठे हुए पानी से फेफड़े के अन्दर से सांस नली का हिस्सा सीधा-सीधा जुड़ जाता है और खांसी के साथ बलगम व पानी आने लगता है। इस भयानक दशा को मेडिकल भाषा में 'बीपीएफ यानी ब्रान्को प्ल्यूरल फिश्च्युला' कहते हैं। इसमें एक तरफ का फेफड़ा तो नष्ट होता ही है दूसरी तरफ के फेफड़े के भी नष्ट होने का खतरा मंडराने लगता है। ऐसी भयावह स्थिति को पनपने नहीं देना चाहिये, तुरंत किसी थोरेसिक सर्जन यानी चेस्ट सर्जन से सम्पर्क करना चाहिये।

छाती का पूरा पानी निकलवाना अत्यंत आवश्यक

अगर इकट्ठे हुए पानी की मात्रा 400 मिलीग्राम या अधिक है तो तुरंत किसी थोरेसिक सर्जन से सम्पर्क करें और छाती में ट्यूब डलवा कर सारा पानी निकलवा दें जिससे फेफड़ा जख्मी व क्षतिग्रस्त होने से बच जाए। अपने भारतवर्ष में यह देखा गया है कि फिजीशियन ट्यूब द्वारा छाती से पानी निकलवाने के प्रति काफी उदासीन रहते हैं और बार-बार इंजेक्शन द्वारा पानी निकलवाते रहते हैं। होना यह चाहिये अगर एक बार सुई द्वारा अपेक्षित सफलता नहीं मिलती तो तुरंत किसी थोरेसिक सर्जन की मदद से ट्यूब द्वारा छाती से पानी निकलवा देना चाहिये। ट्यूब द्वारा पानी निकलवाना फेफड़े की दुर्दशा रोकने का सबसे सरल व समयोचित उपाय है।

पानी निकलवाने के बाद भी फिजीशियन द्वारा दी जाने वाली टी.बी. की या अन्य कोई दवा बंद न करें क्योंकि पानी जमा होने के कारणों का निदान होना अत्यंत आवश्यक है। तुरंत किसी थोरेसिक सर्जन से आप्रेशन करवा कर फेफड़े को नष्ट होने से बचाइए। ❑

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. सरदार वल्लभ भाई पटेल, 2. दामोदर घाटी, 3. काजीरंगा नेशनल पार्क (असम), 4. अनुच्छेद 148, 5. मोरारजी देसाई, 6. 1991 ई. में, 7. सीएसओ, 8. रामचन्द्र पांडुरंग, 9. चन्दबरदाई, 10. अजय मानिकराव खानविल्कर

जैविक खेती से मुनाफा ही मुनाफा

गाय की सींग गाय का रक्षा कवच है। गाय को इसके द्वारा सीधे तौर पर प्राकृतिक ऊर्जा मिलती है। गाय की मृत्यु के चार-पांच साल बाद तक भी यह सुरक्षित बनी रहती है। गाय की मृत्यु के बाद उसकी सींग का उपयोग श्रेष्ठ गुणवत्ता की खाद बनाने के लिये प्राचीन समय से होता आ रहा है। सींग की खाद भूमि की उर्वरता बढ़ाती हुई मुद्रा उत्प्रेरक का काम करती है जिससे पैदावार बढ़ जाती है।

निर्माण विधि : सींग को साफ करके उसमें ताजे गोबर को अच्छी तरह से भर लें। सितम्बर-अक्तूबर महीने में जब सूर्य दक्षिणायन पक्ष में हों, तब इस गोबर भरे सींग को एक से डेढ़ फीट गहरे गड्ढे में नुकीला सिरा ऊपर रखते हुए दबा देते हैं। इस सींग को गड्ढे से छह माह बाद मार्च-अप्रैल में चंद्र दक्षिणायन पक्ष में निकाल लेते हैं।

कुछ समय बाद खाद से मीठी महक आती है, जो इसके अच्छी प्रकार से तैयार हो जाने का प्रमाण है। इस प्रकार एक सींग में 30-35 ग्राम खाद मिल जाती है, जो एक एकड़ खेत के लिये पर्याप्त है। इस खाद का प्रयोग करने के लिये 25 ग्राम सींग खाद को 13 लीटर स्वच्छ जल से घोल लेते हैं। घोलने के समय कम से कम एक घंटे तक इसे लकड़ी की सहायता से हिलाते-मिलाते रहना चाहिये।

प्रयोग विधि : सींग खाद से बने घोल का प्रयोग बीज की बुआई अथवा रोपाई से पहले सायंकाल छिड़काव विधि से करना चाहिये।

जीवामृत खाद के मिश्रण को 200 लीटर जल में मिलाकर एक एकड़ खेत में बिखेर दें या छिड़काव करें यह खाद खेत में असंख्य लाभप्रद जीवाणुओं को पैदा कर देगी। किसी फलदार वृक्ष में तने से 2 मीटर दूर तक एक फुट चौड़ी तथा एक फुट गहरी नाली खोदकर खेत पर उपलब्ध कूड़ा-करकट भर दें और इसे जीवामृत खाद से अच्छे से गीला करें। इसका परिणाम फलोत्पादन पर पड़ता है। पेड़ की पैदावार बढ़ जाती है।

सिलिका युक्त सींग की खाद : सिलिका पाउडर आटे को लोईनुमा बनाकर गाय की सींग में भर दें। छह माह बाद गोबर को सींग खाद के समान ही उसे निकाल कर जल में घोल लें। इसका भंडारण सदा शीशे के पात्र में करना चाहिये।

इस प्रकार से निर्मित सिलिका खाद को फफूंदनाशक के रूप में प्रभावी तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

असंख्य लाभप्रद जीवाणुओं को उत्पन्न करने वाली जीवामृत खाद

जीवामृत खाद निर्माण सामग्री : गाय का गोबर, गोमूत्र गोदधि, दाल का आटा एवं गुड़।

निर्माण विधि : 10 कि.ग्रा. गोबर, 10 लीटर गोमूत्र, किसी दाल का दो किलो आटा, दो किलोग्राम गुड़, दो किलोग्राम गोदूध से निर्मित दही की अच्छी प्रकार मिलाकर मिश्रण बना लें और इसे दो दिनों तक छाया में रखें।

प्रयोग विधि : दो दिन बाद तैयार जीवामृत खाद के मिश्रण को 200 लीटर जल में मिलाकर एक एकड़ खेत में बिखेर दें या छिड़काव करें यह खाद खेत में असंख्य लाभप्रद जीवाणुओं को पैदा कर देगी। किसी फलदार वृक्ष में तने से 2 मीटर दूर तक एक फुट चौड़ी तथा एक फुट गहरी नाली खोदकर खेत पर उपलब्ध कूड़ा-करकट भर दें और इसे जीवामृत खाद से अच्छे से गीला करें। इसका परिणाम फलोत्पादन पर पड़ता है। पेड़ की पैदावार बढ़ जाती है। ❑

दुनिया हुई नीम की दीवानी

जब से दुनिया को नीम के कीटनाशक और दूसरे गुणों को पता चला तब से नीम को बढ़ावा देने का काम शुरू हो गया पर भारतवासियों ने कभी इसकी परवाह नहीं की। भारत में अभी नीम के लगभग 220 लाख पेड़ हो गए हैं। अमेरिका, अफ्रीका, लातिन अमेरिका के सब देश जोर-शोर से नीम के गुणों पर काम कर रहे हैं। तंजानिया में लगभग तीन लाख, उगांडा में लगभग 2 लाख नीम के पेड़ हो गए हैं। नीम एक ऐसा पेड़ है जो 537 कीड़ों को नियंत्रित कर सकता है परन्तु हमारे वैज्ञानिक इस पर बात नहीं करते। अगर आप धूप में नीम के पेड़ के नीचे बैठें तो 10 डिग्री तापमान का फर्क होता है जो बहुत है। एक तरह से नीम प्राकृतिक एयर कंडीशनर है। नीम 250 साल तक जीवित रहता है और यह एक ऐसा पेड़ है जो नुकसानदायक कीड़ों की क्षमता कम करता है और अच्छे कीड़ों को बढ़ावा देता है, जो अद्भुत है। ❑

प्रतिक्रिया

सरकारी शरण में मतांतरण

❑ डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

भारत सरकार का एक अल्पसंख्यक आयोग है। भारत सरकार का मानना है कि इस देश में अल्पसंख्यक सदा खतरे से घिरे रहते हैं। इस देश के लोग अल्पसंख्यकों को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए अलग से व्यवस्था करना बहुत जरूरी है। अल्पसंख्यक आयोग भारत सरकार की इसी सोच का परिणाम है। जिन दिनों भारत में अंग्रेजों की सरकार थी, उन दिनों उस सरकार का भी लगभग यही मत था। तब उन्होंने अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिये जिन्ना को नियुक्त कर दिया था। जिन्ना ने अल्पसंख्यकों की रक्षा पाकिस्तान की स्थापना करके की। भारत सरकार का यह मत फिर दृढ़ होने लगा है कि अब फिर अल्पसंख्यक असुरक्षित होने लगे हैं। लेकिन इस बार शायद लगा होगा कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का जिम्मा किसी अकेले जिन्ना को नहीं दिया जा सकता।

अल्पसंख्यक आयोग शायद यह मानता है कि अल्पसंख्यकों के अधिकार इस देश के लोगों से अलग हैं। इसलिये उसने अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पुरस्कार देने की एक नई परम्परा शुरू की है। इस बार आयोग ने यह अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पुरस्कार ओडिशा के जनजातीय क्षेत्र कंधमाल में विदेशी पैसे के बल पर जनजातीय समाज के मतांतरण के काम में लगे हुए एक पादरी अजय कुमार सिंह को देने का निर्णय किया है।

वह अंग्रेजों का वक्त था, यह सोनिया गांधी का वक्त है। इसलिए यह काम एक आयोग को सौंपा गया है। यही आयोग अल्पसंख्यक आयोग कहलाता है। अल्पसंख्यक आयोग शायद यह मानता है कि अल्पसंख्यकों के अधिकार इस देश के लोगों से अलग हैं। इसलिये उसने अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पुरस्कार देने की एक नई परम्परा शुरू की है। इस बार आयोग ने यह अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पुरस्कार ओडिशा के जनजातीय क्षेत्र कंधमाल में विदेशी पैसे के बल पर जनजातीय समाज के मतांतरण के काम में लगे हुए एक पादरी अजय कुमार सिंह को देने का निर्णय किया है। कंधमाल जिला काफी संवेदनशील जिला माना जाता है। यहां कंध जनजाति के लोग रहते हैं। अंग्रेजों के समय से ही चर्च कंधों को ईसाई मजहब में मतांतरित करने का प्रयास करता रहा है। कंध उसके इन प्रयासों का जी जान से विरोध करते आ रहे हैं। 2008 में चर्च ने माओवादियों की सहायता से कंधों के देवतातुल्य महापुरुष स्वामी लक्ष्मणानंद की हत्या कर दी थी। स्वामी जी चर्च के मतांतरण आंदोलन का सफलतापूर्वक विरोध कर रहे थे। उस समय कंधों और ईसाई मिशनरियों में भयंकर दंगा फसाद हुआ था और कई जानें भी गई थीं। चर्च द्वारा स्थापित एक संस्था जन विकास परिषद् इस पूरे विवाद में कंधों के गुस्से का शिकार हुई थी, क्योंकि चर्च विदेशी पैसे के प्रयोग से इसी संस्था की आड़ में मतांतरण आंदोलन चला रहा है। अजय सिंह नाम का यह पादरी मतांतरण के आंदोलन में अग्रणी तो था ही, साथ ही स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती की हत्या के बाद कंधों को सबक सिखाने के अभियान में सबसे आगे था। दरअसल कंधमाल में कंधा को प्रताड़ित करने और उन्हें घेरने में जो त्रिमूर्ति वहां सबसे ज्यादा बदनाम है, उसमें जॉन दयाल, जो अपने आप को चर्च की किसी अखिल भारतीय परिषद् का प्रधान भी बताता है। राधाकांत नायक, जिस पर आरोप है कि उसने जनजाति का गलत प्रमाण पत्र देकर सरकारी नौकरी हासिल की और जो कंधमाल को ईसाई बनाने के षड्यंत्र का मुख्य सूत्रधार माना जाता है और तीसरे यही पादरी अजय कुमार सिंह जो इन दोनों की योजनाओं को सफल बनाने के लिये फील्ड वर्क करता है। इस षड्यंत्र की कोई कड़ी कहीं से भी कमजोर न रह जाए इसकी जिम्मेदारी अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष वजाहत हबीबुल्लाह को करनी थी।

अल्पसंख्यकों का सबसे बड़ा खतरा, उनके अनुसार भारतीय सेना से ही है, लेकिन हबीबुल्लाह और चर्च के रास्ते में अभी भी एक बाधा थी। पादरी अजय कुमार सिंह क्योंकि ओडिशा में मतांतरण के काम में लगे हुए हैं, इसलिए पादरी के सिर पर ताज सजाने से पहले ओडिशा सरकार की राय लेना भी जरूरी था। ओडिशा सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग के इस षड्यंत्र का विरोध किया। उसने कहा कि पादरी के गले में पुरस्कार की यह माला पहनाने से जनजातीय समाज की भावनाएं भड़केंगी और कंधमाल में फिर तनाव पैदा होगा।

असली प्रश्न इसके बाद शुरू होता है। आखिर कंधमाल समाज, जनजातीय लोगों और ओडिशा सरकार के विरोध के बावजूद सोनिया गांधी की सरकार **(शेष पृष्ठ 26 पर)**

शिकागो की धर्ममहासभा में आत्मीयता का बोध

❑ जगदीश कुमार 'जमथली'

11 सितम्बर, 1893 ई. सोमवार के दिन धर्म-महासभा सम्मेलन का शुभ प्रारम्भ हुआ। सुबह दस बजे महासभा आरम्भ हुई। संतों, साधुओं और अन्य जो महासभा में भाग ले रहे थे , के नाम बुलाने पर एक-एक मंच पर आ रहे थे और अपने-अपने विचार जनता के बीच रख रहे थे। दोपहर होने लगी थी। इस बीच विवेकानन्द को भी कई बार मंच पर बुलाया गया, परन्तु उन्होंने प्रवक्ता से बाद में नम्बर लगाने को कहा। दोपहर हो गई। विवेकानन्द का नाम पुकारा गया। वे बार-बार अपने हाथों की हथेलियां मल रहे थे। व्यग्रता उनके मुखमण्डल पर स्पष्ट थी। वे मंच पर गए। उनके मुंह से सबसे पहले ये शब्द निकले, 'प्यारे अमेरिकावासी भाई-बहनो।' उनका इतना ही कहना था कि सभा हॉल तालियों से गूंज उठा। ये सब इस बात का प्रभाव था कि अब तक जो भी वक्ता मंच पर आए थे, उन्होंने अपनी-अपनी बातें तो की परन्तु प्रेम के दो शब्द नहीं बोल पाए थे। प्रेम के दो शब्द स्वामी विवेकानन्द ने उन सभी में कहे थे। उन शब्दों की मिठास अमृत को भी लजा देने वाली थी। तालियों की गूंजन जब थमी तो विवेकानन्द ने भाषण देना शुरू किया। उन्होंने कुछ श्लोक पढ़े और उनके व्याख्यानों का उपसंहार करते हुए उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये कि साम्प्रदायिकता, धर्मांधता एवं कट्टरता का शीघ्र ही विनाश होगा और तब प्रत्येक धर्म की पताका पर युद्ध नहीं सहायता, विनाश नहीं मिलन और शांति का संदेश लिखा होगा। उन्होंने सभा में दर्जन भर व्याख्यान दिये। उनके मन में एक अभिलाषा थी कि वे अपने आर्य पूर्वजों द्वारा आविष्कृत सनातन धर्म को समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत करें और उस धर्म-सभा में उन्हें ये अवसर प्राप्त हो गया। उन्होंने अपनी अमृतमय वाणी द्वारा पाश्चात्य जगत के सम्मुख सनातन धर्म को रखा। उस दिन एक अपरिचित भारतीय संन्यासी अचानक ही मंच का आवश्यक व्यक्ति बन गया था। उसके बिना धर्म-महासभा का अस्तित्व ही बेमानी माना जाने लगा था। उसके आदमकद चित्र शिकागो की सड़कों पर ससम्मान लगाए गए थे। नीचे नाम 'स्वामी विवेकानन्द' लिखा था। सैकड़ों पथिक उसके सम्मान में सिर झुकाने के लिये ठहर जाते थे। उन्हें अपने यहां अतिथि स्वरूप बुलाने की लोगों में होड़ सी लग गई थी। उन्होंने पूरे भारत का गौरव विश्व स्तर पर बढ़ाया था। परन्तु फिर भी उस अध्यात्मिक शक्ति का मन बेचैन था। बार-बार एक हूक उसके मस्ष्कि को कचोट रही थी-'मैं इस सुख-वैभव, धन-धान्य का क्या करूं! मैं यहां इतने सुख में हूं और वहां मेरी धरती पर निर्धनता है। यहां अपने सुख-वैभव के निमित एक मनुष्य हजारों डॉलर खर्च कर सकता है और वहां एक मुट्ठी भर अनाज के लिये हजारों जानें' तड़पती है। उफ! हे धरती मां! मैं क्या करूं? मातृभूमि हेतु उनकी वेदना किस प्रकार तीव्र थी। ये शब्द उसके साक्षी हैं। दिन-प्रतिदिन ऊपर चढ़ता उनकी ख्याति का सितारा और अधिक रोशन होता गया। काफी समय तक पाश्चात्य देशों का अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने पुन: भारत लौटने का निश्चय कर लिया। पश्चिम में भी उन्हें वह सम्मान प्राप्त हो गया था जो पहले भारत में उन्हें प्राप्त था। वे न्यूयॉर्क और लंदन में अध्यात्मिकता के बीज बो आए थे जो उनकी सबसे श्रेष्ठ उपलब्धि थी।

स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ही भविष्यवाणी को सत्य कर दिया था कि 'मैं चालीसवां वर्ष भी पार नहीं करूंगा।' वे 39 वर्ष 5 माह और 24 दिन की आयु में ही अपना शरीर त्यागकर इस संसार को छोड़ कर चले गए थे। उन्होंने कहा था 'यह देश गिर अवश्य गया है परन्तु निश्चय फिर उठेगा। और ऐसा उठेगा कि दुनियां देखकर दंग रह जाएगी।' ❑

उन्होंने कुछ श्लोक पढ़े और उनके व्याख्यानों का उपसंहार करते हुए उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये कि साम्प्रदायिकता, धर्मांधता एवं कट्टरता का शीघ्र ही विनाश होगा और तब प्रत्येक धर्म की पताका पर युद्ध नहीं सहायता, विनाश नहीं मिलन और शांति का संदेश लिखा होगा। उन्होंने सभा में दर्जन भर व्याख्यान दिये। उनके मन में एक अभिलाषा थी कि वे अपने आर्य पूर्वजों द्वारा आविष्कृत सनातन धर्म को समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत करें और उस धर्म-सभा में उन्हें ये अवसर प्राप्त हो गया।

समसामयिकी

खाद्य सुरक्षा का सपना

❑ प्रो. लल्लन प्रसाद

आखिरकार खाद्य सुरक्षा अध्यादेश को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की मंजूरी मिल गई और इसके साथ ही कांग्रेस ने अगले आम चुनाव में सफलता हासिल करने के लिये अपना ब्रह्मास्त्र भी चल दिया। खाद्य सुरक्षा योजना के तहत देश के 125 करोड़ लोगों में से 67 प्रतिशत को रियायती दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराने का वायदा किया गया है, लेकिन इसके लिये कांग्रेस और उसके नेतृत्त्व वाली केन्द्रीय सत्ता की ओर से जैसी हड़बड़ी का परिचय दिया गया उससे अनेक सवाल खड़े होते हैं। सबसे पहला सवाल तो यही है कि जब संसद का मॉनसून सत्र इसी माह प्रारम्भ होना है तब खाद्य सुरक्षा के लिये अध्यादेश का सहारा क्यों लिया जा रहा है? इतनी महत्वपूर्ण योजना पर सबसे पहले संसद में व्यापक विचार-विमर्श क्यों नहीं होना चाहिए। इतना ही अहम सवाल यह भी है कि सम्प्रग सरकार ने नौ साल तक खाद्य सुरक्षा योजना की जरूरत क्यों महसूस नहीं की। कांग्रेस और संप्रग सरकार के इरादों पर सवाल इसलिए भी खड़े होते हैं, क्योंकि सिर्फ विपक्षी दल ही नहीं, बल्कि सरकार को अंदर-बाहर से समर्थन दे रहे दल भी इस योजना के मौजूदा मसौदे से सहमत नहीं हैं। राजनीतिक दल इस योजना को चाहे जिस रूप में देखें, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि नीति नियंताओं को भुखमरी और कुपोषण की गम्भीर समस्या के निदान के उपाय करने ही चाहिये।

सबसे पहला सवाल तो यही है कि जब संसद का मॉनसून सत्र इसी माह प्रारम्भ होना है तब खाद्य सुरक्षा के लिये अध्यादेश का सहारा क्यों लिया जा रहा है? इतनी महत्वपूर्ण योजना पर सबसे पहले संसद में व्यापक विचार-विमर्श क्यों नहीं होना चाहिए। इतना ही अहम सवाल यह भी है कि सम्प्रग सरकार ने नौ साल तक खाद्य सुरक्षा योजना की जरूरत क्यों महसूस नहीं की।

आबादी बहुल विकासशील देशों में खाद्य सुरक्षा एक बड़ी चुनौती होती है। भारत आबादी की दृष्टि से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है, जहां एक तिहाई आबादी गरीबी रेखा के नीचे है। पिछले 20 वर्षों में आर्थिक विकास की दर अच्छी रही, किन्तु वैश्वीकरण और उभरती अर्थव्यवस्था का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंचा। खाद्य सुरक्षा उस स्थिति को कहते हैं जिसमें हर नागरिक को समय पर समुचित मात्रा में स्वस्थ जीवन के लिये स्वास्थ्यवर्धक खाना उपलब्ध हो। हमारा देश अभी इस स्थिति से बहुत दूर है। यह एक दुखद सत्य है कि जिस देश में लाखों टन अनाज गोदामों में सड़ जाता है, चूहों और जानवरों की भेंट चढ़ जाता है वहां इंसान भूखों मरते हैं। सरकारी गोदामों में 50 लाख टन से अधिक खाद्यान्न का स्टाक रहने के बावजूद देश में भुखमरी है। सर्वोचच न्यायालय तक ने सरकार को इस बात के लिये फटकारा है। सच्चाई यह है कि अपने देश में सरकारी खाद्य वितरण की व्यवस्था कमजोर है। नेताओं, अधिकारियों और वितरकों में व्याप्त भ्रष्टाचार की वजह से गरीब जनता को उतना लाभ नहीं मिल पाता जितना अपेक्षित है।

कुछ विकासशील देशों ने खाद्य सुरक्षा के सम्बंध में अच्छे प्रयोग किये हैं। ब्राजील का नाम इन सबमें ऊपर है। ब्राजील और भारत के बीच कई समानताएं भी हैं। ब्राजील एक बड़ा देश है और आबादी की दृष्टि से भी दक्षिण अमेरिका के बड़े देशों में है। कुछ वर्षों पूर्व वहां भी बड़ी तादाद में लोग गरीबी रेखा के नीचे थे। अनाज के उत्पादन में ब्राजील न केवल आत्मनिर्भर रहा है बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य पदार्थों का निर्यातक भी रहा। इसके बावजूद वहां भुखमरी की समस्या थी। सरकारी वितरण व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्याप्त था। 2003 में ब्राजील की सरकार ने शून्य भुखमरी की नीति का एलान किया। फोम जीरो के नाम से प्रचलित इस नीति का उद्देश्य था ब्राजील को भुखमरी की समस्या से मुक्त करना। इसके साथ ही खाद्य सुरक्षा को शिक्षा, तकनीकी विकास, किसानों के लिये ऋण और उनके उत्पाद की समुचित कीमत और विक्रय की व्यवस्था और सस्ते दामों पर भोजन उपलब्ध कराने के लिए रेस्टोरेंट की व्यापक व्यवस्था के साथ जोड़ने की पहल भी की गई। बोल्सो फैमिली योजना के अंतर्गत सशर्त नगद हस्तांतरण की व्यवस्था की गई, जिससे गरीबों की क्रय शक्ति में वृद्धि हुई। स्कूलों में बच्चों को मुफ्त खाना देने की योजना ब्राजील में 1940 से ही आरम्भ हो गई थी। पोषक खाना समुचित मात्रा में सभी स्कूली विद्यार्थियों को मुफ्त दिया जाता है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में कम कीमतों पर अच्छा खाना देने वाले रेस्टोरेंट बनाए गए हैं। खाने में

स्थानीय पैदावार और लोगों की खाने की पसंद का विशेष ध्यान रखा जाता है। ब्राजील की खाद्य सुरक्षा योजना काफी हद तक सफल रही है। हालांकि अभी भी इसमें कमजोरियां हैं। भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हुआ है, लेकिन सरकार सजग है। ब्राजील की गैर सरकारी संस्थाओं ने खाद्य सुरक्षा के लिये जनांदोलन किया, जिसका सुखद परिणाम निकला।

भारत 1970 के दशक से स्वास्थ्य उत्पादन के मामले में लगभग आत्मनिर्भर रहा है। 2006-07 को छोड़कर अनाज आयात की स्थिति नहीं आई। दालों और तिलहन का उत्पादन आवश्यकता से कम रहा है और इसकी वजह से इनका आयात भारी मात्रा में होता रहा। गल्ले का स्टॉक सरकारी गोदामों में इतनी मात्रा में है कि यदि वितरण व्यवस्था ठीक हो तो कोई भूखा न मरे। विगत वर्षों में सरकार की ओर से खाद्य सुरक्षा को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बल देने वाली जो योजनाएं चलाई गईं उनमें सरकारी स्कूलों में दोपहर का खाना और अनिवार्य रोजगार वाली मनरेगा कुछ कारगर साबित हुई, लेकिन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण लाभ उस हद तक नहीं हुआ जो अपेक्षित था।

खाद्य सुरक्षा की चर्चा एक लम्बे समय से हो रही थी, लेकिन अभी तक इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की जा सकी थी। धर्म, सम्प्रदाय और जातिवाद की राजनीति गरीबी उन्मूलन और भुखमरी मिट ाने जैसी योजनाओं को प्राथमिकता नहीं दे पाई। वर्तमान सरकार ने पहली बार 2011 में एक खाद्य सुरक्षा बिल प्रस्तावित किया, जो फिर संसद के सामने लाया गया है। सरकार इसे आने वाले चुनाव के लिये ब्रह्मास्त्र मानती है, जबकि विरोधी दल इसमें वोट बैंक की राजनीति देख रहे हैं। अनेक राज्य भी इस योजना से असहमत हैं। उनके विरोध के अपने तर्क हैं। यह भी गौर करने लायक है कि अभी लाभान्वित परिवारों की परिभाषा बहुत स्पष्ट नहीं है। राज्य सरकारें बिल के प्रावधान से अधिक देने को स्वतंत्र हैं, लेकिन केन्द्र की सहायता सीमित होगी। अनेक गैर सरकारी संस्थाएं जो खाद्य सुरक्षा को लेकर वर्षों से आन्दोलन कर रही है, इस बिल से संतुष्ट नहीं है और इसे आंख पोंछने का प्रयास तक मानने को तैयार नहीं है। ❑

(लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं)

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr.Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr.Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोबलम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अध्रंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का ऐक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

3 अगस्त से 9 अगस्त : अंबुजा कम्पनी दाड़लाघाट,
10 अगस्त से 15 अगस्त : शिवमंदिर दाड़लाघाट
29 अगस्त से 4 सितम्बर : राम प्रताप दाखोंदेवी चेतराम न्यास, रोड़ा सेक्टर, बिलासपुर

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें :

Regular Clinic :
Mohalla Gurusar, Ward No. 2, Near Himachal Glass House, UNA (H.P.)

कृष्णमय संत
बाबा बालजी महाराज

आश्रम : श्री राधाकृष्ण मंदिर, कोटलाकलां ऊना (रलवे स्टेशन के पास)

1 **अगस्त** : श्रीवृंदावन धाम, **2 अगस्त** : एकादशी, **3 अगस्त** : श्री होशियार सिंह, गांव खलबेड़ी परोइयां, **4 अगस्त** : श्री हजारी लाल, गांव ईसपुर शिव मंदिर बाग, **5 अगस्त** : श्री राम प्रकाश, गांव देहला 1 बजे, श्री हरमेश ठाकुर गांव कुठारबीत 5 बजे श्री रक्षपाल सिंह गांव जनकौर, **6 अगस्त** : श्री रामप्रकाश, गांव तलवाड़ा, नंगल, **7 अगस्त** : श्री कर्मचंद गांव सोहड़ा कंडी नजदीक मुकेरियां, श्रीमती मलकीत कौर गांव गोरा मुकेरियां, **8 अगस्त** : श्री केशव कुमार गांव धनेटा, **9 अगस्त** : श्री संतोख सिंह गांव पंडोगा, श्री यशपाल कपिला गांव अप्पर ब्रह्मपुर कपिला देहरियां, **10 अगस्त** : श्री संजीव कुमार गांव करनेड़ा, बड़सर रेली जजरी, श्री बीरबल गांव दवेढ़ा लठियाणी, **11 अगस्त** : श्री श्याम सुन्दर, चेतन गौतम गांव संतोषगढ़, श्री जोगिन्द्र सिंह गांव बेहड़ी (चुरूड़ू), **12 अगस्त** : श्री तारा चंद गांव बेला रामगढ़ दरगाही, श्री पवन कुमार शर्मा, गांव पचरंडे, **13 अगस्त** : श्री सीताराम चौहान, कुहाड़छन्न बाबा बालक नाथ मंदिर, श्री सतपाल गांव ईसपुर, श्री सतीश द्विवेदी रक्कड़ कालोनी जय मां काली मंदिर, सायं 5 बजे ख्वाजा खिजर बेड़ा कमेटी संतोषगढ़, **14 अगस्त** : श्री मनसा देवी मंदिर गांव गगरेट, 4 बजै बाबा बालक नाथ मंदिर अंबोटा, श्री विजय कुमार सिकरी, जवाहर मार्कीट, नंगल, **15 अगस्त** : श्री सतीश कुमार पुरी गांव ईसपुर नौन, श्री राजेंद्र कुमार गांव रैंसरी (झलेड़ा), **16 अगस्त** : संक्रांति।

17वीं सिंधु दर्शन यात्रा

❑ धनीराम

1975 ई. तक लद्दाख क्षेत्र बाहरी सैलानियों के लिये वर्जित रहा। लद्दाख अनेक प्रकार की विविधता को समेटे हुए इस महान देश का अनूठा भाग है और दुनिया का सबसे ऊंचा क्षेत्र है। सर्दियों में यहां का तापमान -30 डिग्री से -40 डिग्री तक गिर जाता है। लद्दाख का सम्पर्क इन दिनों मात्र हवाई मार्ग से रह जाता है। संसार की सबसे ऊंची घाटी में वर्षा नाम मात्र की होती है जिस कारण पूरे लद्दाख में जंगलों का अभाव है और ऑक्सीजन की बहुत कमी अनुभव की जाती है। इन कारणों से मनुष्य की क्षमता 40 प्रतिशत कम हो जाती है। लद्दाख के दो मुख्य नगरों लेह एवं कारगिल के अतिरिक्त सारी आबादी छोटे-छोटे गांवों में बसी है जो पूरे लद्दाख में दूर-दूर तक फैले हुए हैं। लेह नगर के चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ी चोटियों पर स्थित बौद्ध मठ (गोम्पा) उनके ऊपर हवा में फहराते सुन्दर झंडे एक सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करते हैं। लद्दाख के दूसरे मुख्य नगर कारगिल की अधिकांश आबादी शिया मुसलमानों की है। परम्परागत जीवन शैली में रंगे बौद्ध और मुसलमान आपस में मिल-जुलकर रहते हैं।

सिंधु यात्रा लद्दाख का देश के साथ जोड़ने का अच्छा प्रयास है। यह मार्ग सात महीने देश से कटा रहता है। लोग दुनियां से कटे रहते हैं। अपने आपको अलग-थलग महसूस करते हैं। सिंधु दर्शन यात्रा समिति वर्ष में तीन बैठकें लद्दाख कल्याण संघ के साथ करके कुछ योजना बनाए तो स्थानीय लोग इस कार्यक्रम में अधिक मात्रा में जुड़ सकते हैं। यह उत्सव कुछ लोगों का न होकर लद्दाखी उत्सव बन जाएगा।

लद्दाख में पिछले कुछ वर्षों से सिंधु नदी उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। कुछ वर्षों से इस नदी के घाट पर जून मास में दो उत्सव आयोजित किये जाते हैं। एक सरकार द्वारा दूसरा सिंधु दर्शन यात्रा समिति द्वारा आयोजित किया जाता है। सरकार द्वारा आयोजित उत्सव सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों तक सीमित रहता है। सिंधु दर्शन यात्रा समिति द्वारा आयोजित उत्सव में पूरे भारत से यात्री सिंधु दर्शन के लिये आते हैं। स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उत्सव में भाग लेते हैं। इस उत्सव से स्थानीय लोगों को रोजगार भी उपलब्ध होता है। होटल मालिक और टैक्सी मालिक इस उत्सव की प्रतीक्षा करते हैं। इस नदी का पूरे भारत के साथ विशेष सम्बंध सनातन काल से रहा है। सिंधु नदी भारत की चार पवित्र नदियों में से एक है जो कैलाश पर्वत के उत्तर और मध्य एशिया से निकलकर लद्दाख से होकर बहती है। इसका तिब्बती नाम 'सिंधे खबाब' है। सरकार इस उत्सव को सिंधे खबाब के नाम से आयोजित करती है। इसका सम्बंध आर्य सभ्यता के साथ जोड़ा जाता है। सबसे पहले आर्य सिंधु घाटी में आकर बसे थे। इस नदी के किनारे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की संसकृति फली-फूली। 1922 में सरकार ने इसकी खुदाई करके कुछ अवशेष प्राप्त किये। सिंधु घाटी की सभ्यता भी इसी नदी के किनारे विकसित हुई। इस वर्ष भी 17वीं सिंधु दर्शन यात्रा का आयोजन सिंधु यात्रा समिति, लद्दाख कल्याण संघ, हिमालय परिवार के तत्वावधान में सुन्दर, अनुशासित व व्यवस्थित प्रकार से किया गया। सबसे अच्छी बात यह रही कि लद्दाख कल्याण संघ ने पहली बार सिंधु दर्शन यात्रा को स्वयं आगे आकर पूर्णतया संचालित किया। यात्रा की पूरी व्यवस्था लद्दाख कल्याण संघ के द्वारा की गई। यात्रियों के ठहरने, घूमने की समुचित व्यवस्था की गई। स्वागत कार्यक्रम 24 को घाट में रखा गया। 26 जून रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें स्थानीय कलाकारों ने आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। भोजन व्यवस्था प्रशासन से अनुमति, प्रचार व्यवस्था प्रशासन से सहयोग आदि का पूरा ध्यान रखा गया। प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम तनाव में रहता था। इस वर्ष अच्छी बात यह रही कि सभी कार्यकर्ता तनाव मुक्त होकर कार्य कर रहे थे। सभी कार्यकर्ता अपने-अपने कार्य का निष्ठापूर्वक कर रहे थे। हर कार्यकर्ता को एक कार्य दिया गया था। कुल यात्री 1000 के लगभग आए 750 यात्री पंजीकृत आए। 200 यात्री अपनी योजना से आए 250 के लगभग स्वयंसेवक थे। सिंधु यात्रा लद्दाख का देश के साथ जोड़ने का अच्छा प्रयास है। यह मार्ग सात महीने देश से कटा रहता है। लोग दुनियां से कटे रहते हैं। अपने आपको अलग-थलग महसूस करते हैं। सिंधु दर्शन यात्रा समिति वर्ष में तीन बैठकें लद्दाख कल्याण संघ के साथ करके कुछ योजना बनाए तो स्थानीय लोग इस कार्यक्रम में अधिक मात्रा में जुड़ सकते हैं। यह उत्सव कुछ लोगों का न होकर लद्दाखी उत्सव बन जाएगा। जून जुलाई अगस्त इन तीन महीनों का मौसम लद्दाख सैलानियों के लिये उत्तम है। ❑

वजीर राम सिंह पठानिया

अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध भारत के चप्पे-चप्पे पर वीरों ने संग्राम किया है। हिमाचल प्रदेश की नूरपुर रियासत के वजीर रामसिंह पठानिया ने 1848 में ही स्वतंत्रता का बिगुल फूंक दिया था। इनका जन्म वजीर शामसिंह एवं इन्दौरी देवी के घर 1824 में हुआ था। पिता के बाद इन्होंने 1848 में वजीर का पद सम्भाला। उस समय रियासत के राजा वीरसिंह का देहान्त हो चुका था। उनका बेटा जसवन्त सिंह केवल दस साल का था।

अंग्रेजों ने जसवन्त सिंह को नाबालिग बताकर राजा मानने से इन्कार कर दिया तथा उसकी 20 हजार रुपये वार्षिक पेंन्शन निर्धारित कर दी। इस पर रामसिंह बौखला गए। उन्होंने जम्मू से मनहास, जसवां से जसरोटिये, अपने क्षेत्र से पठानिये और कटोच राजपूतों को एकत्र किया। पंजाब से सरनाचंद 500 हरिचन्द राजपूतों को ले आया। 14 अगस्त, 1848 की रात में सबने शाहपुर कण्डी दुर्ग पर हमला बोल दिया। वह दुर्ग उस समय अंग्रेजों के अधिकार में था। भारी मारकाट के बाद 15 अगस्त को रामसिंह ने अंग्रेजी सेना को खदेड़कर दुर्ग पर अपना झंडा लहरा दिया।

इसके बाद रामसिंह ने सब ओर ढोल पिटवाकर मुनादी करवाई कि नूरपुर रियासत से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो गया है। रियासत का राजा जसवन्त सिंह है और मैं उनका वजीर। इस घोषणा से पहाड़ी राजाओं में उत्साह की लहर दौड़ गई। वे सब भी रामसिंह के झंडे के नीचे आने लगे, लेकिन अंग्रेजों ने और रसद लेकर फिर दुर्ग पर धावा बोल दिया। शस्त्रास्त्र के अभाव में रामसिंह को दुर्ग छोड़ना पड़ा, पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

वे पंजाब के रास्ते गुजरात गए और रसूल के कमांडर से एक हजार सिख सैनिक और रसद लेकर लौटे। इनकी सहायता से उन्होंने फिर से दुर्ग पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी सेना पठानकोट भाग गई। यह सुनकर जसवां, दातारपुर, कांगड़ा तथा ऊना के शासकों ने भी स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया, पर अंग्रेज भी कम नहीं थे, उन्होंने कोलकाता से कुमुक बुलाकर फिर हमला किया। रामसिंह पठानिया को एक बार फिर दुर्ग छोड़ना पड़ा। उन्होंने राजा शेरसिंह के 500 वीर सैनिकों की सहायता से 'डल्ले की धार' पर मोर्चा बांधा। अंग्रेजों ने 'कुमणी दे बैल' में डेरा डाल दिया।

दोनों दलों में मुकेसर और मरीकोट के जंगलों में भीषण युद्ध हुआ। रामसिंह पठानिया की 'चण्डी' नामक तलवार 25 सेर वजन की थी। उसे लेकर वे जिधर घूमते, उधर ही अंग्रेजों का सफाया हो जाता। भीषण युद्ध का समाचार कोलकाता पहुंचा, तो ब्रिगेडियर व्हीलर के नेतृत्व में नई सेना आ गई। अब रामसिंह चारों ओर से घिर गए। ब्रिटिश रानी विक्टोरिया का भतीजा जॉन पॉल पुरस्कार पाने के लिये स्वयं ही रामसिंह को पकड़ने बढ़ा, पर चण्डी के एक वार से वह धराशायी हो गया।

अब कई अंग्रेजों ने मिलकर षड्यंत्रपूर्वक घायल वीर राम सिंह को पकड़ लिया। उन पर फौजी अदालत में मुकदमा चलाकर आजीवन कारावास के लिये पहले सिंगापुर और फिर रंगून भेज दिया गया। रंगून की जेल में ही मातृभूमि को याद करते हुए उन्होंने 17 अगस्त, 1849 को अपने प्राण त्याग दिये।

'डल्ले की धार' पर लगा शिलालेख आज भी उस वीर की याद दिलाता है। नूरपुर के जनमानस में इनकी वीरगाथा, रामसिंह पठानिया की वारके नाम से गायी जाती है। ❑

शाकाहारी लोग ज्यादा आशावादी

जो लोग खाने में फलों और हरी सब्जियों का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं वे भविष्य को लेकर अन्य लोगों के मुकाबले ज्यादा आशावादी होते हैं। यह दावा हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक शोध के बाद किया है। वैज्ञानिकों ने इस बात को खोज निकाला है कि जो लोग आशावादी होते हैं, उनके रक्त में कैराटीनॉइड्स नामक प्लांट कम्पाउंड्स का स्तर काफी ज्यादा होता है। कैरोटीनॉयड बीटा कैरोटीन है जो सामान्य रूप से फलों और पत्तेदार हरी सब्जियों में प्रमुख रूप से पाया जाता है।

डेली मेल में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे पहले किये गए अध्ययन केवल यही दर्शाते हैं कि एंटी ऑक्साडेंट्स की मात्रा जिनके रक्त में ज्यादा होती है, वह अच्छे स्वास्थ्य का सूचक होता है। ये एंटीऑक्साडेंट्स शरीर में अन्य अणुओं को भी ऐसे कणों से दूर रखते हैं जो कोशिकाओं को नष्ट करने का कारण बन सकते हैं और बीमारियां बढ़ाने में सहायक होते हैं। 'हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ' की प्रमुख शोधकर्ता जुलिया बोहम के अनुसार उनमें बीटा-कैरोटीन जैसी कैरोटीनोइड्स का स्तर भी काफी ज्यादा होता है। आशावाद और कैरोटीनोइड्स के हैल्दी स्तर के बीच सम्बंध दर्शाने वाला यह अपनी तरह का पहला अध्ययन है। ❑

अंटार्कटिक-ग्रीनलैंड ग्लेशियरों से 300 अरब टन बर्फ पिघली

उपग्रह से ली गई तस्वीरों से पता चलता है कि पिछले एक दशक में अंटार्कटिक और ग्रीनलैंड के ग्लेशियरों से प्रतिवर्ष 300 अरब टन बर्फ पिघल रही है। दरअसल, उपग्रहों के जरिये पृथ्वी के ध्रुवों पर मौजूद बर्फ की चादर पर नजर रखी जा रही है। ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक पर फैली बर्फ की चादरों के लगातार पिघलने से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में हो रहे उतार चढ़ाव का पता लगाने के लिये ग्रैविटी रिकवरी एंड क्लाइमेट एक्सपेरिमेंट (ग्रेस) नामक उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया था। ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका पर छायी बर्फ की चादर पृथ्वी के ग्लेशियर की बर्फ का करीब 99.5 प्रतिशत है। अगर यह सारी बर्फ पिघल जाती है तो दुनिया भर के समुद्रों का जलस्तर 63 मीटर तक बढ़ जाएगा।

नेचर जिगो साइंस जर्नल ने शोधकर्ताओं के हवाले से बताया कि उपग्रह द्वारा वर्ष 2002 से इकट्ठे किये जा रहे आंकड़े हालांकि किसी भी नतीजे तक पहुंचने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। अभी ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता कि आने वाले दशकों में कितनी बर्फ पिघल कर समुद्र में मिल जाएगी और कितनी तेजी से समुद्रों का जलस्तर बढ़ेगा। प्रमुख शोधकर्ता ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी के ग्लासियोलॉजी सेंटर के बर्ट वाउटर्स ने बताया, 'अभियान के दौरान स्पष्ट हुआ कि बर्फ की चादर से प्रतिवर्ष 300 अरब टन बर्फ पिघल रही है और आने वाले समय में बर्फ पिघलने की दर बढ़ भी सकती है।' ❑ (साभार : दैनिक जागरण)

अमेरिकी विश्वविद्यालय में गीता पढ़ना अनिवार्य

अमेरिका की सेटन हॉल यूनिवर्सिटी में सभी छात्रों के लिये गीता पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया है। इस यूनिवर्सिटी का मानना है कि छात्रों को सामाजिक सरोकारों से रूबरू कराने के लिये गीता से बेहतर कोई और माध्यम नहीं हो सकता है। अत: वहां सभी विषयों के छात्रों के लिये अनिवार्य पाठ्यक्रम के तहत इस विषय का अध्ययन जरूरी है। यह यूनिवर्सिटी 1856 में न्यू जर्सी में स्थापित हुई थी और एक स्वायत्त कैथोलिक यूनिवर्सिटी है। यूनिवर्सिटी के 10,800 छात्रों में से एक तिहाई से ज्यादा गैर ईसाई हैं। इनमें भारतीय छात्रों की संख्या अच्छी-खासी है। गीता की स्टडी अनिवार्य बनाने के इस फैसले के पीछे प्रो. अमर की प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी में कोर कोर्स के तहत सभी छात्रों के लिये अनिवार्य पाठ्यक्रम होता है, जिसकी स्टडी सभी विषयों के छात्रों को करनी होती है। 2001 में यूनिवर्सिटी ने अलग पहचान कायम करने के लिये कोर कोर्स की शुरूआत की थी। इनमें छात्रों को सामाजिक सरोकारों और जिम्मेदारियों को रूबरू कराया जाता है। प्रो. अमर ने बताया कि इस मामले में गीता का ज्ञान सवोत्तम साधन है। गीता की अहमियत को समझते हुए विश्वविद्यालय ने इसका अध्ययन अनिवार्य किया। ❑

यूरोप में मिला अमरनाथ जैसा शिवलिंग

भारतीयों की आस्था का प्रतीक भगवान अमरनाथ की पवित्र गुफा के समान ही आस्ट्रिया में भी गुफा की खोज हुई है, जिसमें ठीक उसी तरह का बर्फ से बना शिवलिंग मिला है। जैसा कि सैकड़ों सालों से अमरनाथ धाम में बनता आया है। इस तरह की शिवलिंग की शिलाएं सिर्फ यूरोप में पायी गई। यूरोप में ऑस्ट्रिया की ईस्त्रीसनवेल्ट और स्लोवालिया में डिमेनोवस्का की गुफाएं अमरनाथ की तरह हैं। ईस्त्रीसनवेल्ट गुफाएं सबसे बड़ी हैं और इनकी बर्फ शिलाओं का आकार पवित्र अमरनाथ की तुलना में शिवलिंग से बहुत अधिक मिलता है। ये आस्ट्रिया में सेल्जबर्ग क्षेत्र में गुफाओं के जाल के रूप में 40 कि.मी. के दायरे में फैला है। 1879 में सेल्जबर्ग के एंटन पोसेल्ट नामक वैज्ञानिक ने इन गुफाओं में 200 मीटर तक जाकर इनकी औपचारिक खोज अपने नाम दर्ज करायी और इसे माउंटनोयरिंग मैगजीन में छपवाया। इससे पहले यहां सिर्फ शिकारी जाया करते थे। 1920 में यहां पर्यटकों का आवागमन शुरू हुआ। भूवैज्ञानिक और वैज्ञानिक परीक्षणों से ज्ञात होता है कि ये बर्फ की शिलाएं करीब 2000 साल पुरानी हैं। ❑

वीर बालक अभिमन्यु

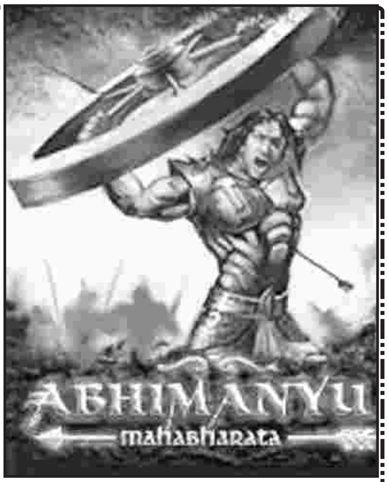

पन्द्रह वर्ष के बालक अभिमन्यु अपने रथ पर बैठे और शत्रुओं के व्यूह में घुस गए थे। चारों ओर से उन पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा हो रही थी, किन्तु इससे वे तनिक भी डरे नहीं। उन्होंने अपने धनुष से पानी की झड़ी के समान चारों ओर वाणों की वर्षा आरम्भ कर दी। कौरवों की सेना के हाथी, घोड़े और सैनिक कट-कट कर गिरने लगे। रथ चूर-चूर होने लगे।

चारों ओर हा-हाकार मच गया। सैनिक इधर-उधर भागने लगे। द्रोणाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य आदि बड़े-बड़े महारथी सामने आए किन्तु बालक अभिमन्यु की गति को कोई भी रोक नहीं सका। वे दिव्यास्त्रों को दिव्यास्त्रों से काट देते थे। उनकी मार के आगे आचार्य द्रोण और कर्ण तक को बार-बार पीछे हटना पड़ा। एक पर एक व्यूह के द्वार को तोड़ते हुए द्वार रक्षक महारथी को परास्त करते हुए वे आगे ही बढ़ते गए। उन्होंने छह द्वार पार कर लिए।

अभिमन्यु अकेले थे और उन्हें बार-बार युद्ध करना पड़ रहा था। जिन महारथियों को उन्होंने पराजित करके पीछे छोड़ दिया था, वे भी उन्हें घेरकर युद्ध करने आ पहुंचे थे। दूसरी ओर कौरव पक्ष के बड़े-बड़े सभी महारथी अभिमन्यु के बाणों से घायल हो गए थे। द्रोणाचार्य ने स्पष्ट कह दिया–'जब तक इस बालक के हाथ में धनुष है, इससे जीतने की आशा नहीं करनी चाहिये।'

कर्ण आदि 6 महारथियों ने एक साथ अन्यायपूर्वक अभिमन्यु पर आक्रमण कर दिया। उनमें से एक-एक ने उनके रथ के एक-एक घोड़े मार दिये। एक ने सारथी को मार दिया और कर्ण ने उसका धनुष काट दिया। इतने पर भी अभिमन्यु रथ पर से कूदकर उन शत्रुओं पर प्रहार करने लगे और उनकी मार से एक बार फिर चारों ओर भगदड़ मच गई। क्रूर शत्रुओं ने अन्याय करते हुए उनको घेर रखा था। सबके सब उन पर शस्त्र वर्षा कर रहे थे। उनका कवच और शिरस्त्रांण कटकर गिर गया था।

जब अभिमन्यु के पास सब अस्त्र-शस्त्र कट गए तब उन्होंने रथ का चक्का उठाकर ही मारना प्रारम्भ किया। इस अवस्था में भी कोई उन्हें सम्मुख आकर हरा नहीं सका। शत्रुओं ने पीछे से उनके शिरस्त्राणरहित सिर पर गदा मारी। उस गदा के लगने से अभिमन्यु सदा के लिये रणभूमि में गिर पड़े। इस प्रकार शूरतापूर्वक उन्होंने वीरगति प्राप्त की। इसी से भगवान श्रीकृष्ण ने बहन सुभद्रा को धैर्य बंधाते हुए अभिमन्यु की जैसी मृत्यु अपने सहित सबके लिये वांछनीय बतलाया था। ❑

(पृष्ठ 26 का शेष)

का अल्पसंख्यक आयोग कुख्यात पादरी अजय सिंह के सिर पर यह मोर मुकुट सजाने के लिये परेशान क्यों है? यहीं पूरे षड्यंत्र की गुत्थी छिपी हुई है। दरअसल चर्च को लगता था कि स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती की हत्या के बाद कंधमाल का जनजातीय समाज भयभीत हो जाएगा। स्वामी जी की हत्या का एक और संदेश भी था। जो भी चर्च के रास्ते में आएगा, उसका यही हश्र होगा।

यदि चर्च ने स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती जैसे व्यक्तित्व को नहीं बख्शा तो आम कंध की क्या औकात हो सकती है, लेकिन हुआ इसके विपरीत। स्वामी जी की शहादत ने कंध समाज का, चर्च द्वारा किये जा रहे मतांतरण आंदोलन का विरोध करने का संकल्प और पक्का कर दिया। पादरी अजय सिंह को पुरस्कार कंध समाज के इसी आत्मबल और आत्मविश्वास को सरकारी सत्ता के बल पर तोड़ने का यह नया प्रयास है। चर्च का कंध समाज को संदेश स्पष्ट है। सोनिया गांधी की सरकार हमारे साथ है। तुम अपनी लड़ाई किसके बलबूते पर लड़ोगे?इस देश की जनता को यही उत्तर देना होगा भारत भारतीयता की लड़ाई किसके बलबूते लड़ेगा? जहां तक सोनिया गांधी की सरकार का सवाल है, उसने अपना स्टैंड साफ कर दिया है। वह पादरी के साथ है। ❑

कहानी बीजगणित रेखागणित की

बीजगणित की खोज का श्रेय भारतवासियों को है। ईसा से कई सौ साल पहले भारत में यज्ञ आदि अनुष्ठान होते थे, जिनकी वेदियों का निर्माण बीजगणित रेखागणित के सिद्धांतों के आधार पर किया जाता था। समकोण, विषमकोण, त्रिभुजों के बारे में पूरी जानकारी वैदिक ऋषियों को थी। भारत के दो ऋषियों भास्कराचार्य तथा आर्यभट्ट को बीजगणित के सिद्धांतों के प्रतिपादन का श्रेय प्राप्त है। भास्कराचार्य ने करणी चिह्न (रेडियल साइन) सहित बीजगणित के कई सिद्धांत खोजे। उन्होंने ऋणात्मक राशियों की अवधारणा तथा क्रमचय (परम्युटेशन), संचय (काम्बीनेशन) जैसे नियम भी बनाए और दो का वर्गमूल ज्ञात किया। आठवीं शताब्दी में भारत में ही द्वितीय श्रेणी के अनिर्धारित समीकरणों का हल खोजा गया, जबकि यूरोप के विद्वान् समीकरण के सिद्धांत अठारहवीं शताब्दी में खोज पाए। बीजगणित में जिस पाइथागोरस के सिद्धांत कि समकोण त्रिभुज में कर्ण का वर्ग, उसी त्रिभुज के आधार एवं लम्ब के योग के बराबर होता है, इसे बहुत पहले शुल्व सूत्र में ही खोज लिया गया था। यही नहीं आर्यभट्ट ने त्रिभुज, समलम्ब चतुर्भुज एवं वृत्त के क्षेत्रफल को ज्ञात करने के नियम भी खोज लिये थे। आर्यभट्ट ने किसी वृत्त की परिधि व उसके व्यास का अनुपात 'ग' का मान भी प्रतिपादित किया था।

भास्कराचार्य ने चलन फलक की आधारशिला रखी थी। आर्यभट्ट के ग्रंथ 'सूर्य सिद्धांत' में ऐसी 'त्रिकोणमितीय' प्रणाली के बारे में बताया गया है, जो यूनान के विद्वानों को भी नहीं मालूम थी। बीजगणित के सिद्धांत, भारत से ही यूरोप के देशों में पहुंचे। 'बीजगणित' को 'अलजेब्रा' की उत्पत्ति दी गई है, जो अरबी भाषा के 'अलजाबर' शब्द से बना है। कुछ विदेशी विद्वान 'अलजेब्रा' की उत्पत्ति यूनान में हुई मानते थे किन्तु अब प्रमाणों ने यह साबित कर दिया कि भारत ही 'बीजगणित' का जन्मदाता है। ❑

– शिवचरण चौहान

हंसते-हंसते

☺ गबरू : यार मैं सोचता था कि इस दुनिया में सिर्फ मैं ही बेवकूफ हूं।
झबरू : क्यों क्या हुआ?
गबरू : कल मैंने अपनी पत्नी को कश्मीरी सेब लाने को कहा था।
झबरू : तो क्या हुआ?
गबरू : आज कश्मीर से पत्नी का फोन आया कि उसने सेब खरीद लिये हैं।

☺ एक परीक्षा में प्रश्न था चैलेंज कैसे किया जाता है? छात्र ने पूरे पेज खाली छोड़ दिये और अन्त में लिखा दम है तो पास करके दिखाओ।

☺ लड़का (लड़की से) : जानेमन इस दिल में आ जाना।
लड़की : सैंडल निकालू क्या?
लड़का : पगली यह मंदिर नहीं... ऐसे आ जा।

☺ एक बेरोजगार युवक ने इश्तहार देखा। जरूरत है एक नौकर की... ज्यादा काम नहीं है इसलिए तनख्वाह नहीं मिलेगी बस दो बार खाना मिलेगा। उसने सोचा बेरोजगार हूं। जब तक कोई दूसरा काम नहीं मिले तब तक यहीं काम करता हूं। कम से कम खाना तो मिलेगा। वह वहां गया तो मालिक बोला पुत्र ऐसा करो ये टिफिन उठा के रोज गुरुद्वारे के लंगर में खाना खाया करो और मेरे लिये भी लाया करो। बस इतना ही काम है।

प्रश्नोत्तरी

1. भारत के पहले उपप्रधानमंत्री कौन थे?
2. भारत की प्रथम सिंचाई परियोजना कौन सी थी?
3. गैंडे के लिये प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान कौन सा है?
4. भारत के नियंत्रण एवं महालेखा परीक्षक की नियुक्ति संविधान के किस अनुच्छेद के तहत की जाती है?
5. किस प्रधानमंत्री के कार्यकाल में दो उपप्रधानमंत्री एक साथ नियुक्त हुए थे?
6. भारत में रुपये का अवमूल्यन सर्वप्रथम कब किया गया?
7. वर्तमान में भारत की राष्ट्रीय आय का अनुमान कौन लगाता है?
8. तांत्या टोपे का वास्तविक नाम क्या था?
9. हिन्दी का प्रथम महाकवि कौन है?
10. हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश कौन है?

उतराखण्ड : सेवा में जुटा संघ

ऋशिकेश मे संघ का सहायता शिविर

गंगोत्री में घायल तीर्थयात्रियों को सेना की मदद से राहत शिविर में पंहुचाते संघ के कार्यकर्ता

बचाव कार्य में सेना का सहयोग करते स्वयंसेवक

तीर्थ यात्रियों को भोजन व पानी पिलाते हुये संघ के कार्यकर्ता

घायल तीर्थयात्रियों को सेना की मदद से राहत शिविर में पंहुचाते हुये संघ के स्वयंसेवक

सैनिको को पानी पिलाते हुये स्वयंसेवक

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

MIT Group of Institutions

Best College of Himachal Pradesh

B.Tech. ✔ CSE ✔ ECE ✔ CE ✔ ME ✔ EEE ✔ EE

Diploma ✔ CSE ✔ ECE ✔ CE ✔ ME ✔ EE ✔ AE

Hotel Management & Catering Technology

Film Technology & TV Production

Fashion Designing & Garment Technology

ADMISSION OPEN

Best Placement *Record*

Limited Seats!

Apply Now!

MIT Group of Institutions

MIT Knowledge Valley

Bani (Una-Hamirpur Express Way), Barsar Distt. Hamirpur (H.P.)
Ph.: (91) 1972-215234, 200534, Fax: 215334
City Office: Above Aryan Store
DC Office Chowk, Hamirpur Ph.: (91) 1972-225588
Website: www.mithmr.com

ADMISSION HELPLINES 9805034000, 9805134000, 9805516027, 9805516003, 9805516018, 9805516001, 9805516028, 9805516031

Designed by: New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004, से